قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

قَالَ الْمَلَاُ

पारा - 9

eParah

الجزء 9

قَالَ	الْمَلَاُ	الَّذِيْنَ	اسْتَكْبَرُوْا	مِنْ قَوْمِهٖ	لَنُخْرِجَنَّكَ	يٰشُعَيْبُ
कहा	सरदारों ने	जिन्होंने	तकब्बुर किया	उसकी क़ौम में से	अलबत्ता हम ज़रूर निकाल देंगे तुझे	ऐ शुऐब

وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مَعَكَ	مِنْ قَرْيَتِنَآ	اَوْ	لَتَعُوْدُنَّ	فِيْ مِلَّتِنَا ط
और उन्हें जो	ईमान लाए हैं	साथ तेरे	अपनी बस्ती से	या	अलबत्ता तुम ज़रूर पलटोगे	हमारी मिल्लत में

قَالَ	اَوَلَوْ	كُنَّا	كٰرِهِيْنَ ﴿88﴾ قف	قَدِ	افْتَرَيْنَا	عَلَى اللّٰهِ	كَذِبًا
उसने कहा	क्या भला अगरचे	हों हम	नापसंद करने वाले	तहक़ीक़	गढ़ लिया हमने	अल्लाह पर	झूठ

اِنْ	عُدْنَا	فِيْ مِلَّتِكُمْ	بَعْدَ	اِذْ	نَجّٰىنَا	اللّٰهُ	مِنْهَا ط	وَمَا
अगर	पलटे हम	तुम्हारी मिल्लत में	बाद इसके	जब	निजात दी हमें	अल्लाह ने	उससे	और नहीं

يَكُوْنُ	لَنَآ	اَنْ	نَّعُوْدَ	فِيْهَآ	اِلَّآ	اَنْ	يَّشَآءَ	اللّٰهُ	رَبُّنَا ط
है (जायज़)	हमारे लिए	कि	हम पलटें	उसमें	मगर	ये कि	चाहे	अल्लाह	जो रब है हमारा

وَسِعَ	رَبُّنَا	كُلَّ	شَيْءٍ	عِلْمًا ط	عَلَى اللّٰهِ	تَوَكَّلْنَا ط	رَبَّنَا
घेर रखा है	हमारे रब ने	हर	चीज़ को	इल्म के ऐतबार से	अल्लाह ही पर	तवक्कल किया हमने	ऐ हमारे रब

افْتَحْ	بَيْنَنَا	وَبَيْنَ	قَوْمِنَا	بِالْحَقِّ	وَاَنْتَ	خَيْرُ	الْفٰتِحِيْنَ ﴿89﴾
फ़ैसला करदे	दर्मियान हमारे	और दर्मियान	हमारी क़ौम के	साथ हक़ के	और तू	बेहतर है	सब फ़ैसला करने वालों से

وَقَالَ	الْمَلَاُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	مِنْ قَوْمِهٖ	لَئِنِ	اتَّبَعْتُمْ	شُعَيْبًا
और कहा	सरदारों ने	जिन्होंने	कुफ़्र किया	उसकी क़ौम में से	अलबत्ता अगर	पैरवी की तुमने	शुऐब की

اِنَّكُمْ	اِذًا	لَّخٰسِرُوْنَ ﴿90﴾	فَاَخَذَتْهُمُ	الرَّجْفَةُ	فَاَصْبَحُوْا
बेशक तुम	तब	अलबत्ता ख़सारा पाने वाले हो	पस पकड़ लिया उन्हें	ज़लज़ले ने	तो उन्होंने सुबह की

ركوع 4

فِيْ دَارِهِمْ	جٰثِمِيْنَ ﴿91﴾ ج	الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	شُعَيْبًا	كَاَنْ	لَّمْ
अपने घरों में	औंधे मुंह	वो जिन्होंने	झुठलाया	शुऐब को	गोया कि	ना

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْخٰسِرِيْنَ (92)	هُمُ	كَانُوْا	شُعَيْبًا	كَذَّبُوْا	الَّذِيْنَ	فِيْهَا ۛۚ	يَغْنَوْا
ख़सारा पाने वाले	वो ही	थे	शुऐब को	झुठलाया	वो जिन्होंने	उनमें	वो बसे थे

رِسٰلٰتِ	اَبْلَغْتُكُمْ	لَقَدْ	يٰقَوْمِ	وَقَالَ	عَنْهُمْ	فَتَوَلّٰى
पैग़ामात	पहुंचा दिए मेंने तुम्हें	अलबत्ता तहक़ीक़	ऐ मेरी क़ौम	और कहा	उनसे	तो उसने मुंह फेर लिया

ع 11 9 1

كٰفِرِيْنَ (93) ع	عَلٰى قَوْمٍ	اٰسٰى	فَكَيْفَ	لَكُمْ ۚ	وَنَصَحْتُ	رَبِّىْ
जो काफ़िर हैं	ऐसे लोगों पर	मैं अफ़सोस करूं	तो क्यों कर	तुम्हारी	और ख़ैरख़्वाही की मेंने	अपने रब के

بِالْبَاْسَآءِ	اَهْلَهَا	اَخَذْنَآ	اِلَّآ	مِّنْ نَّبِيٍّ	فِىْ قَرْيَةٍ	اَرْسَلْنَا	وَمَآ
साथ सख़्ती	उसके रहने वालों को	पकड़ लिया हमने	मगर	कोई नबी	किसी बस्ती में	भेजा हमने	और नहीं

السَّيِّئَةِ	مَكَانَ	بَدَّلْنَا	ثُمَّ	يَضَّرَّعُوْنَ (94)	لَعَلَّهُمْ	وَالضَّرَّآءِ
बुराई के	जगह	बदला दिया हमने	फिर	वो गिड़ गिड़ाऐं/आजिज़ी करें	ताकि वो	और तकलीफ़ के

الضَّرَّآءُ	اٰبَآءَنَا	مَسَّ	قَدْ	وَّقَالُوْا	عَفَوْا	حَتّٰى	الْحَسَنَةَ
तकलीफ़	हमारे आबा ओ अजदाद को भी	पहुंची थी	तहक़ीक़	और वो कहने लगे	वो ज़्यादा हो गए	यहां तक कि	भलाई को

اَنَّ	وَلَوْ	لَا يَشْعُرُوْنَ (95)	وَّهُمْ	بَغْتَةً	فَاَخَذْنٰهُمْ	وَالسَّرَّآءُ
बेशक	और अगर	वो शऊर ना रखते थे	और वो	अचानक	तो पकड़ लिया हमने उन्हें	और ख़ुशी

بَرَكٰتٍ	عَلَيْهِمْ	لَفَتَحْنَا	وَاتَّقَوْا	اٰمَنُوْا	اَهْلَ الْقُرٰٓى
बरकतें	उन पर	अलबत्ता खोल देते हम	और तक़वा करते	ईमान ले आते	बस्तियों वाले

كَانُوْا	بِمَا	فَاَخَذْنٰهُمْ	كَذَّبُوْا	وَلٰكِنْ	وَالْاَرْضِ	مِّنَ السَّمَآءِ
थे वो	बवजह उसके जो	तो पकड़ लिया हमने उन्हें	उन्होंने झुठलाया	और लेकिन	और ज़मीन से	आसमान से

بَيَاتًا	بَاْسُنَا	يَّاْتِيَهُمْ	اَنْ	اَهْلُ الْقُرٰٓى	اَفَاَمِنَ	يَكْسِبُوْنَ (96)
रात को	अज़ाब हमारा	आ जाए उन पर	कि	बस्तियों वाले	क्या भला बेख़ौफ़ हो गए	वो कमाई करते

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَّاْتِيَهُمْ	اَنْ	اَهْلُ الْقُرٰٓى	اَمِنَ	اَوَ	نَآئِمُوْنَ ﴿97﴾ ط	وَّهُمْ
आजाए उन पर	कि	बस्तियों वाले	बेख़ौफ़ हो गए	या क्या	सो रहे हों	और वो

فَلَا	مَكْرَ اللّٰهِ ج	اَفَاَمِنُوْا	يَلْعَبُوْنَ ﴿98﴾	وَّهُمْ	ضُحًى	بَاْسُنَا
पस नहीं	अल्लाह की तदबीर से	क्या भला वो बेख़ौफ़ हो गए	वो खेलते हों	और वो	चाश्त के वक़्त	अज़ाब हमारा

يَهْدِ	اَوَلَمْ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿99﴾ ع	الْقَوْمُ	اِلَّا	مَكْرَ اللّٰهِ	يَاْمَنُ
रहनुमाई की	क्या भला नहीं	जो ख़सारा पाने वाले हैं	वो लोग	मगर	अल्लाह की तदबीर से	बेख़ौफ़ हुआ करते

ع 12 6 2

نَشَآءُ	لَّوْ	اَنْ	اَهْلِهَآ	مِنْۢ بَعْدِ	الْاَرْضَ	يَرِثُوْنَ	لِلَّذِيْنَ
हम चाहें	अगर	(इस बात ने) कि	उसके रहने वालों के	बाद	ज़मीन के	वारिस बनते हैं	उन लोगों की जो

لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿100﴾	فَهُمْ	عَلٰى قُلُوْبِهِمْ	وَنَطْبَعُ	بِذُنُوْبِهِمْ ج	اَصَبْنٰهُمْ
ना वो सुनें	फिर वो	उनके दिलों पर	और हम मोहर लगा दें	बवजह उनके गुनाहों के	पकड़ लें हम उन्हें

جَآءَتْهُمْ	وَلَقَدْ	مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ج	عَلَيْكَ	نَقُصُّ	الْقُرٰى	تِلْكَ
आए उनके पास	और अलबत्ता तहक़ीक़	उनकी ख़बरों मैं से	आप पर	हम बयान कर रहे हैं	बस्तियां हैं	ये

كَذَّبُوْا	بِمَا	لِيُؤْمِنُوْا	كَانُوْا	فَمَا	بِالْبَيِّنٰتِ ج	رُسُلُهُمْ
उन्होंने झुठलाया	बवजह उसके जो	कि वो ईमान लाते	थे वो	पस ना	साथ खुली निशानियों के	रसूल उनके

وَمَا	الْكٰفِرِيْنَ ﴿101﴾	عَلٰى قُلُوْبِ	اللّٰهُ	يَطْبَعُ	كَذٰلِكَ	مِنْ قَبْلُ ط
और नहीं	काफ़िरों के	दिलों पर	अल्लाह	मोहर लगा देता है	इसी तरह	उससे पहले

اَكْثَرَهُمْ	وَّجَدْنَآ	وَاِنْ	مِّنْ عَهْدٍ ج	لِاَكْثَرِهِمْ	وَجَدْنَا
उनकी अक्सरियत को	पाया हमने	और बेशक	कोई अहद	उनकी अक्सरियत के लिए	पाया हमने

اِلٰى	بِاٰيٰتِنَآ	مُّوْسٰى	مِنْۢ بَعْدِهِمْ	بَعَثْنَا	ثُمَّ	لَفٰسِقِيْنَ ﴿102﴾
तरफ़	साथ अपनी निशानियों के	मूसा को	बाद उनके	भेजा हमने	फिर	अलबत्ता फ़ासिक़

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَانَ	كَيْفَ	فَانْظُرْ	بِهَا ج	فَظَلَمُوْا	وَمَلَا۟ئِهٖ	فِرْعَوْنَ
हुआ	किस तरह	पस देखिए	साथ उनके	तो उन्होंने ज़ुल्म किया	और उसके सरदारों के	फ़िरऔन

رَسُوْلٌ	اِنِّيْ	يٰفِرْعَوْنُ	مُوْسٰى	وَقَالَ	الْمُفْسِدِيْنَ (103)	عَاقِبَةُ
एक रसूल हूं	बेशक मैं	ऐ फ़िरऔन	मूसा ने	और कहा	फ़साद करने वालों का	अंजाम

عَلَى اللّٰهِ	اَقُوْلَ	لَآ	اَنْ	عَلٰٓى	حَقِيْقٌ	مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (104) لا
अल्लाह पर	मैं कहूं	ना	कि	इस पर	क़ायम हूं	रब्बल आलमीन की तरफ़ से

فَاَرْسِلْ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	بِبَيِّنَةٍ	جِئْتُكُمْ	قَدْ	الْحَقَّ ط	اِلَّا
पस भेज दो	तुम्हारे रब की तरफ़ से	एक वाज़ेह निशानी	लाया हूं मैं तुम्हारे पास	तहक़ीक़	हक़ (बात)	मगर

فَاْتِ	بِاٰيَةٍ	جِئْتَ	كُنْتَ	اِنْ	قَالَ	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ (105) ط	مَعِيَ
तो ले आ	कोई निशानी	लाया तू	है तू	अगर	उसने कहा	बनी इस्राईल को	साथ मेरे

فَاِذَا	عَصَاهُ	فَاَلْقٰى	مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (106)	كُنْتَ	اِنْ	بِهَآ
तो यकायक	असा अपना	तो उसने डाला	सच्चों में से	है तू	अगर	उसे

بَيْضَآءُ	هِيَ	فَاِذَا	يَدَهٗ	وَّنَزَعَ	مُّبِيْنٌ (107) ج	ثُعْبَانٌ	هِيَ
सफ़ेद चमकता हुआ था	वो	तो यकायक	हाथ अपना	और उसने बाहर निकाला	वाज़ेह	अज़्दहा था	वो

ع 13 9 3

لَسٰحِرٌ	هٰذَا	اِنَّ	فِرْعَوْنَ	مِنْ قَوْمِ	الْمَلَاُ	قَالَ	لِلنّٰظِرِيْنَ (108) ع
अलबत्ता जादूगर है	ये	बेशक	फ़िरऔन की	क़ौम मे से	सरदारों ने	कहा	देखने वालों के लिए

تَاْمُرُوْنَ (110)	فَمَاذَا	مِّنْ اَرْضِكُمْ ج	يُّخْرِجَكُمْ	اَنْ	يُّرِيْدُ	عَلِيْمٌ (109) لا
तुम हुक्म (मशवरा) देते हो	तो क्या	तुम्हारी ज़मीन से	वो निकाल दे तुम्हें	कि	वो चाहता है	ख़ूब इल्म रखने वाला

حٰشِرِيْنَ (111) لا	فِي الْمَدَآئِنِ	وَاَرْسِلْ	وَاَخَاهُ	اَرْجِهْ	قَالُوْٓا
इकट्ठा करने वाले	शहरों में	और भेज दो	और इसके भाई को	इंतिज़ार में रखो इसे	उन्होंने कहा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَأْتُوكَ	بِكُلِّ	سٰحِرٍ	عَلِيمٍ ﴿112﴾	وَجَآءَ	السَّحَرَةُ	فِرْعَوْنَ
वो ले आएंगे तेरे पास	हर	जादूगर	माहिर को	और आए	जादूगर	फ़िरऔन के पास

قَالُوٓا	إِنَّ	لَنَا	لَأَجْرًا	إِنْ	كُنَّا	نَحْنُ	الْغٰلِبِينَ ﴿113﴾
वो कहने लगे	बेशक	हमारे लिए	अलबत्ता अजर (इनआम) होगा	अगर	हुए हम	हम	ग़ालिब

قَالَ	نَعَمْ	وَإِنَّكُمْ	لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿114﴾	قَالُوا	يٰمُوسٰٓى
उसने कहा	हाँ	और बेशक तुम	अलबत्ता मुक़र्रबीन में से होगे	उन्होंने कहा	ऐ मूसा

إِمَّآ	أَنْ	تُلْقِىَ	وَإِمَّآ	أَنْ	نَّكُونَ	نَحْنُ	الْمُلْقِينَ ﴿115﴾	قَالَ
या	ये कि	तुम डालो	और या	ये कि	हम हों	हम ही	डालने वाले	उसने कहा

أَلْقُوا ۚ	فَلَمَّآ	أَلْقَوْا	سَحَرُوٓا	أَعْيُنَ	النَّاسِ	وَاسْتَرْهَبُوهُمْ
तुम डालो	तो जब	उन्होंने डाला	उन्होंने मसहूर कर दिया	निगाहों को	लोगों की	और उन्होंने ख़ौफ़ज़दा कर दिया उन्हें

وَجَآءُو	بِسِحْرٍ	عَظِيمٍ ﴿116﴾	وَأَوْحَيْنَآ	إِلٰى مُوسٰٓى	أَنْ	أَلْقِ
और वो लाए	जादू	बहुत बड़ा	और वही की हमने	तरफ़ मूसा के	ये कि	फेंको तुम

عَصَاكَ ۚ	فَإِذَا	هِىَ	تَلْقَفُ	مَا	يَأْفِكُونَ ﴿117﴾ ۚ	فَوَقَعَ	الْحَقُّ
लाठी अपनी	तो यकायक	वो	वो निगल रही थी	उसे जो	वो गढ़ लाए थे	तो साबित हो गया	हक़

وَبَطَلَ	مَا	كَانُوا	يَعْمَلُونَ ﴿118﴾ ۚ	فَغُلِبُوا	هُنَالِكَ	وَانْقَلَبُوا
और बातिल हो गया	जो	थे वो	वो अमल करते	पस मग़लूब कर दिए गए	उसी जगह	और वो पलटे

صٰغِرِينَ ﴿119﴾ ۚ	وَأُلْقِىَ	السَّحَرَةُ	سٰجِدِينَ ﴿120﴾ ۖ	قَالُوٓا	ءَامَنَّا
ज़लील होकर	और डाल दिए गए	जादूगर	सज्दे में	उन्होंने कहा	ईमान लाए हम

بِرَبِّ الْعٰلَمِينَ ﴿121﴾ ۙ	رَبِّ	مُوسٰى	وَهٰرُونَ ﴿122﴾	قَالَ	فِرْعَوْنُ	ءَامَنتُمْ
रब्बल आलमीन पर	जो रब है	मूसा	और हारून का	कहा	फ़िरऔन ने	ईमान लाए तुम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَّكَرۡتُمُوۡهُ	لَمَكۡرٌ	هٰذَا	اِنَّ	لَكُمۡ ۚ	اٰذَنَ	اَنۡ	قَبۡلَ	بِهٖ
चाल चली तुमने ये	अलबत्ता चाल थी	ये	बेशक	तुम्हें	मैं इजाज़त दूं	कि	इससे पहले	उस पर

تَعۡلَمُوۡنَ (123)	فَسَوۡفَ	اَهۡلَهَا ۚ	مِنۡهَآ	لِتُخۡرِجُوۡا	فِى الۡمَدِيۡنَةِ
तुम जान लोगे	पस अनक़रीब	इसके रहने वालों को	इससे	ताकि तुम निकाल ले जाओ	शहर में

لَاُصَلِّبَنَّكُمۡ	ثُمَّ	مِّنۡ خِلَافٍ	وَّاَرۡجُلَكُمۡ	اَيۡدِيَكُمۡ	لَاُقَطِّعَنَّ
अलबत्ता मैं ज़रूर सूली चढ़ाउंगा तुम्हें	फिर	मुख़ालिफ़ सिम्त से	और पांव तुम्हारे	हाथ तुम्हारे	अलबत्ता मैं जरूर काट दुंगा

تَنۡقِمُ	وَمَا	مُنۡقَلِبُوۡنَ ۚ (125)	اِلٰى رَبِّنَا	اِنَّاۤ	قَالُوۡۤا	اَجۡمَعِيۡنَ (124)
तुम नाराज़ होते	और नहीं	पलटने वाले हैं	तरफ़ अपने रब के	बेशक हम	उन्होंने कहा	सबके-सबको

رَبَّنَاۤ	جَآءَتۡنَا ؕ	لَمَّا	رَبِّنَا	بِاٰيٰتِ	اٰمَنَّا	اَنۡ	اِلَّاۤ	مِنَّاۤ
ऐ हमारे रब	वो आईं हमारे पास	जब	अपने रब की	निशानियों पर	ईमान लाए हम	ये कि	मगर	हमसे

14 ع 18 4

الۡمَلَاُ	وَقَالَ	مُسۡلِمِيۡنَ ع (126)	وَّتَوَفَّنَا	صَبۡرًا	عَلَيۡنَا	اَفۡرِغۡ
सरदारों ने	और कहा	इस हाल में कि मुसलमान हों	और फ़ौत कर हमें	सब्र	हम पर	उंडेल दे

فِى الۡاَرۡضِ	لِيُفۡسِدُوۡا	وَقَوۡمَهٗ	مُوۡسٰى	اَتَذَرُ	فِرۡعَوۡنَ	مِنۡ قَوۡمِ
ज़मीन में	कि वो फ़साद फैलाऐं	और उसकी क़ौम को	मूसा को	क्या तुम छोड़ दोगे	फ़िरऔन की	क़ौम मे से

وَنَسۡتَحۡىٖ	اَبۡنَآءَهُمۡ	سَنُقَتِّلُ	قَالَ	وَاٰلِهَتَكَ ؕ	وَيَذَرَكَ
और हम ज़िंदा छोड़ देंगे	उनके बेटों को	ज़रूर हम ख़ूब क़त्ल कर देंगे	उसने कहा	और तेरे इलाहों को	और छोड़ दे तुझको

لِقَوۡمِهِ	مُوۡسٰى	قَالَ	قٰهِرُوۡنَ (127)	فَوۡقَهُمۡ	وَاِنَّا	نِسَآءَهُمۡ ۚ
अपनी क़ौम से	मूसा ने	कहा	ज़बरदस्त हैं	ऊपर उनके	और बेशक हम	उनकी औरतों को

مَنۡ	يُوۡرِثُهَا	لِلّٰهِ ۙ قف	الۡاَرۡضَ	اِنَّ	وَاصۡبِرُوۡا ۚ	بِاللّٰهِ	اسۡتَعِيۡنُوۡا
जिसे	वो वारिस बनाता है उसका	अल्लाह ही के लिए है	ज़मीन	बेशक	और सब्र करो	अल्लाह से	मदद मांगो तुम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ ؕ	وَالْعَاقِبَةُ	لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿128﴾	قَالُوْٓا	اُوْذِيْنَا
वो चाहता है	अपने बंदों में से	और अंजाम	मुत्तक़ी लोगों के लिए है	उन्होंने कहा	अज़ीयत दिए गए हम

مِنْ قَبْلِ	اَنْ	تَاْتِيَنَا	وَمِنْۢ بَعْدِ	مَا	جِئْتَنَا ؕ	قَالَ
इससे पहले	कि	तू आए हमारे पास	और बाद इसके	जो	तू आ गया हमारे पास	उसने जवाब दिया

عَسٰى	رَبُّكُمْ	اَنْ	يُّهْلِكَ	عَدُوَّكُمْ	وَيَسْتَخْلِفَكُمْ	فِى الْاَرْضِ
क़रीब है	रब तुम्हारा कि	कि	हलाक करदे	तुम्हारे दुश्मन को	और जानशीन बनाए तुम्हें	ज़मीन में

فَيَنْظُرَ	كَيْفَ	تَعْمَلُوْنَ ﴿129﴾ ع	وَلَقَدْ	اَخَذْنَآ	اٰلَ فِرْعَوْنَ	بِالسِّنِيْنَ	ع 15 3 5
फिर वो देखे	किस तरह	तुम अमल करते हो	और अलबत्ता तहक़ीक़	पकड़ा हमने	आले फ़िरऔन को	साथ क़हतसालियों के	

وَنَقْصٍ	مِّنَ الثَّمَرٰتِ	لَعَلَّهُمْ	يَذَّكَّرُوْنَ ﴿130﴾	فَاِذَا	جَآءَتْهُمُ
और कमी के	फलों मे से	शायद कि वो	वो नसीहत पकड़ें	फिर जब	आती उनके पास

الْحَسَنَةُ	قَالُوْا	لَنَا	هٰذِهٖ ج	وَاِنْ	تُصِبْهُمْ	سَيِّئَةٌ	يَّطَّيَّرُوْا
भलाई	वो कहते हैं	हमारे लिए है	ये	और अगर	पहुंचती उन्हें	कोई बुराई	वो बगशगुनी लेते

بِمُوْسٰى	وَمَنْ	مَّعَهٗ ؕ	اَلَآ	اِنَّمَا	طٰٓئِرُهُمْ	عِنْدَ اللّٰهِ
मूसा से	और उनसे जो	साथ थे उसके	ख़बरदार	बेशक	नहूसत उनकी	अल्लाह के पास है

وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿131﴾	وَقَالُوْا	مَهْمَا	تَاْتِنَا بِهٖ
और लेकिन	अक्सर उनके	नहीं वो जानते	और उन्होंने कहा	जो भी	तू लाएगा हमारे पास

مِنْ اٰيَةٍ	لِّتَسْحَرَنَا	بِهَا ۙ	فَمَا	نَحْنُ	لَكَ	بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿132﴾
कोई निशानी	कि तू मसहूर कर दे हमें	साथ उसके	तो नहीं	हम	तुझ पर	ईमान लाने वाले

فَاَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمُ	الطُّوْفَانَ	وَالْجَرَادَ	وَالْقُمَّلَ	وَالضَّفَادِعَ	وَالدَّمَ
तो भेजा हमने	उन पर	तूफ़ान	और टिड्डियां	और जूएं	और मेंढक	और ख़ून

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّجْرِمِيْنَ (133)	قَوْمًا	وَكَانُوْا	فَاسْتَكْبَرُوْا	مُّفَصَّلٰتٍ قف	اٰيٰتٍ
मुजरिम	लोग	और थे वो	तो उन्होंने तकब्बुर किया	अलग-अलग	निशानियां

لَنَا	ادْعُ	يٰمُوْسَى	قَالُوْا	الرِّجْزُ	عَلَيْهِمُ	وَقَعَ	وَلَمَّا
हमारे लिए	दुआ कर	ऐ मूसा	कहने लगे	अज़ाब	उन पर	वाक़ेअ हुआ	और जब

الرِّجْزَ	عَنَّا	كَشَفْتَ	لَئِنْ	عِنْدَكَ ج	عَهِدَ	بِمَا	رَبَّكَ
अज़ाब	हमसे	हटा दे तू	अलबत्ता अगर	पास तेरे	उसने अहद किया	बवजह उसके जो	अपने रब से

فَلَمَّا	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ (134) ج	مَعَكَ	وَلَنُرْسِلَنَّ	لَكَ	لَنُؤْمِنَنَّ
फिर जब	बनी इस्राईल को	साथ तेरे	और अलबत्ता हम ज़रूर भेजेंगे	तुझ पर	अलबत्ता हम ज़रूर ईमान ले आएंगे

هُمْ	اِذَا	بٰلِغُوْهُ	هُمْ	اِلٰٓى اَجَلٍ	الرِّجْزَ	عَنْهُمُ	كَشَفْنَا
वो	यकायक	पहुंचने वाले थे जिसे	वो	एक वक़्त तक	अज़ाब को	उनसे	हटा देते हम

بِاَنَّهُمْ	فِى الْيَمِّ	فَاَغْرَقْنٰهُمْ	مِنْهُمْ	فَانْتَقَمْنَا	يَنْكُثُوْنَ (135)
बवजह उसके कि उन्होंने	समुन्दर में	फिर ग़र्क़ कर दिया हमने उन्हें	उनसे	पस इंतिक़ाम लिया हमने	वो अहद तोड़ डालते

الْقَوْمَ	وَاَوْرَثْنَا	غٰفِلِيْنَ (136)	عَنْهَا	وَكَانُوْا	بِاٰيٰتِنَا	كَذَّبُوْا
उन लोगों को	और वारिस बना दिया हमने	ग़ाफ़िल	उनसे	और थे वो	हमारी आयात को	झुठला दिया था

الَّتِىْ	وَمَغَارِبَهَا	مَشَارِقَ الْاَرْضِ	يُسْتَضْعَفُوْنَ	كَانُوْا	الَّذِيْنَ
वो जो	और उसके मग़रिबों का	ज़मीन के मशरिकों का	वो कमज़ोर समझे जाते	थे वो	वो जो

عَلٰى	الْحُسْنٰى	رَبِّكَ	كَلِمَتُ	وَتَمَّتْ	فِيْهَا ط	بٰرَكْنَا
ऊपर	भलाई वाली	आपके रब की	बात	और पूरी हो गई	उसमें	बरकत दी थी हमने

يَصْنَعُ	كَانَ	مَا	وَدَمَّرْنَا	صَبَرُوْا ط	بِمَا	بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ
बनाता	था	जो	और बरबाद कर दिया हमने	उन्होंने सब्र किया	बवजह उसके जो	बनी इस्राईल के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الربع

فِرْعَوْنَ	وَقَوْمُهٗ	وَمَا	كَانُوْا	يَعْرِشُوْنَ (137)	وَجٰوَزْنَا
फिरऔन	और उसकी क़ौम के लोग	और जो कुछ	थे वो	वो बुलंद करते	और पार उतार दिया हमने

بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	الْبَحْرَ	فَاَتَوْا	عَلٰى قَوْمٍ	يَّعْكُفُوْنَ	عَلٰٓى اَصْنَامٍ
बनी इस्राईल को	समुन्दर के	तो वो आए	ऐसे लोगों पर	जो जमे बैठे थे	बुतों पर

لَّهُمْ ج	قَالُوْا	يٰمُوْسَى	اجْعَلْ	لَّنَآ	اِلٰهًا	كَمَا	لَهُمْ
अपने	उन्होंने कहा	ऐ मूसा	बना	हमारे लिए	कोई इलाह	जैसा कि	उन लोगों के लिए

اٰلِهَةٌ ط	قَالَ	اِنَّكُمْ	قَوْمٌ	تَجْهَلُوْنَ (138)	اِنَّ	هٰٓؤُلَآءِ
इलाह हैं	कहा	बेशक तुम	लोग	तुम जहालत बरत रहे हो	बेशक	ये सब

مُتَبَّرٌ	مَّا	هُمْ	فِيْهِ	وَبٰطِلٌ	مَّا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (139)
बर्बाद होने वाला है	जो	वो हैं	उसमें	और बातिल/ग़लत हैं	जो कुछ	है वो	वो अमल करते

قَالَ	اَغَيْرَ	اللّٰهِ	اَبْغِيْكُمْ	اِلٰهًا	وَّهُوَ	فَضَّلَكُمْ
कहा	क्या ग़ैर	अल्लाह के	मैं तलाश करूं तुम्हारे लिए	कोई इलाह	हालांकि वो	उसने फ़ज़ीलत बख़्शी तुम्हें

عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (140)	وَاِذْ	اَنْجَيْنٰكُمْ	مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ	يَسُوْمُوْنَكُمْ
तमाम जहान वालों पर	और जब	निजात दी हमने तुम्हें	आले फ़िरऔन से	वो चखाते थे तुम्हें

سُوْٓءَ	الْعَذَابِ ج	يُقَتِّلُوْنَ	اَبْنَآءَكُمْ	وَيَسْتَحْيُوْنَ	نِسَآءَكُمْ ط
बुरा	अज़ाब	वो ख़ूब क़त्ल करते	तुम्हारे बेटों को	और वो ज़िंदा छोड़ देते	तुम्हारी औरतों को

وَفِيْ ذٰلِكُمْ	بَلَآءٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	عَظِيْمٌ (141) ع	وَوٰعَدْنَا	مُوْسٰى
और इसमें	आज़माइश थी	तुम्हारे रब की तरफ़ से	बहुत बड़ी	और वादा लिया हमने	मूसा से

ع 16 12 6

ثَلٰثِيْنَ	لَيْلَةً	وَّاَتْمَمْنٰهَا	بِعَشْرٍ	فَتَمَّ	مِيْقَاتُ	رَبِّهٖٓ
तीस	रात का	और पूरा किया हमने उन्हें	साथ दस के	तो पूरा हुआ	मुक़र्रर वक़्त	उसके रब का

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَرْبَعِيْنَ	لَيْلَةً ۚ	وَقَالَ	مُوْسٰى	لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ	اخْلُفْنِيْ	فِيْ قَوْمِيْ
चालीस	रात का	और कहा	मूसा ने	अपने भाई हारून से	जानशीनी करो मेरी	मेरी क़ौम में

وَاَصْلِحْ	وَلَا	تَتَّبِعْ	سَبِيْلَ	الْمُفْسِدِيْنَ ﴿142﴾	وَلَمَّا	جَآءَ
और इस्लाह करो	और ना	तुम पैरवी करो	रास्ते की	फ़साद करने वालों के	और जब	आया

مُوْسٰى	لِمِيْقَاتِنَا	وَكَلَّمَهٗ	رَبُّهٗ ۙ	قَالَ	رَبِّ	اَرِنِيْٓ	اَنْظُرْ
मूसा	हमारे मुक़र्रर वक़्त पर	और कलाम किया उससे	उसके रब ने	कहा	ऐ मेरे रब	दिखा मुझे	मैं देखूं

اِلَيْكَ ۭ	قَالَ	لَنْ	تَرٰىنِيْ	وَلٰكِنِ	انْظُرْ	اِلَى الْجَبَلِ	فَاِنِ
तेरी तरफ़	फरमाया	हरगिज़ ना	तुम देख सकोगे मुझे	और लेकिन	देखो	तरफ़ पहाड़ के	फिर अगर

اسْتَقَرَّ	مَكَانَهٗ	فَسَوْفَ	تَرٰىنِيْ ۚ	فَلَمَّا	تَجَلّٰى	رَبُّهٗ
वो क़ायम रहे	अपनी जगह पर	तो अनक़रीब	तुम देख लोगे मुझे	तो जब	तजल्ली की	उसके रब ने

لِلْجَبَلِ	جَعَلَهٗ	دَكًّا	وَّخَرَّ	مُوْسٰى	صَعِقًا ۚ	فَلَمَّآ	اَفَاقَ
पहाड़ पर	उसने कर दिया उसे	रेज़ा-रेज़ा	और गिर पड़ा	मूसा	बेहोश होकर	फिर जब	होश में आया

قَالَ	سُبْحٰنَكَ	تُبْتُ	اِلَيْكَ	وَاَنَا	اَوَّلُ	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿143﴾	قَالَ
उसने कहा	पाक है तू	तौबा करता हूं मैं	तेरी तरफ़	और मैं	सबसे पहला हूं	ईमान लाने वालों में	फ़रमाया

يٰمُوْسٰٓى	اِنِّيْ	اصْطَفَيْتُكَ	عَلَى النَّاسِ	بِرِسٰلٰتِيْ	وَبِكَلَامِيْ ۖ
ऐ मूसा	बेशक मैं	चुन लिया मैंने तुझे	लोगों पर	साथ अपने पैग़ामात के	और साथ अपने कलाम के

فَخُذْ	مَآ	اٰتَيْتُكَ	وَكُنْ	مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿144﴾	وَكَتَبْنَا	لَهٗ
पस लेलो	जो	दिया मैंने तुझे	और हो जाओ	शुक्र करने वालों में से	और लिख दी हमने	उसके लिए

فِي الْاَلْوَاحِ	مِنْ كُلِّ شَيْءٍ	مَّوْعِظَةً	وَّتَفْصِيْلًا	لِّكُلِّ	شَيْءٍ ۚ
तख़्तियों में	हर चीज़ के बारे में	नसीहत	और तफ़सील	वास्ते हर	चीज़ के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَخُذْهَا	بِقُوَّةٍ	وَّاْمُرْ	قَوْمَكَ	يَاْخُذُوْا	بِاَحْسَنِهَا ؕ
पस पकड़ लो उसे	मज़बूती से	और हुक्म दो	अपनी क़ौम को	वो ले लें	उनके बेहतरीन को

سَاُورِيْكُمْ	دَارَ	الْفٰسِقِيْنَ (145)	سَاَصْرِفُ	عَنْ اٰيٰتِيَ	الَّذِيْنَ
अनक़रीब मैं दिखाउंगा तुम्हें	घर	फ़सिकों का	अनक़रीब मैं फेर दुंगा	अपनी निशानियों से	उन लोगों को जो

يَتَكَبَّرُوْنَ	فِي الْاَرْضِ	بِغَيْرِ	الْحَقِّ ؕ	وَاِنْ	يَّرَوْا	كُلَّ	اٰيَةٍ
तकब्बुर करते हैं	ज़मीन में	बग़ैर	हक़ के	और अगर	वो देख लें	हर	निशानी

لَّا يُؤْمِنُوْا	بِهَا ۚ	وَاِنْ	يَّرَوْا	سَبِيْلَ	الرُّشْدِ	لَا يَتَّخِذُوْهُ
नहीं वो ईमान लाऐंगे	उस पर	और अगर	वो देखलें	रास्ता	हिदायत का	नहीं वो बनाऐंगे उसे

سَبِيْلًا ۚ	وَاِنْ	يَّرَوْا	سَبِيْلَ	الْغَيِّ	يَتَّخِذُوْهُ	سَبِيْلًا ؕ	ذٰلِكَ
रास्ता	और अगर	वो देखलें	रास्ता	गुमराही का	वो बनालेंगे उसे	रास्ता	ये

بِاَنَّهُمْ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا	وَكَانُوْا	عَنْهَا	غٰفِلِيْنَ (146)
बवजह उसके कि उन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को	और थे वो	उनसे	ग़ाफ़िल

وَالَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا	وَلِقَآءِ	الْاٰخِرَةِ	حَبِطَتْ	اَعْمَالُهُمْ ؕ
और वो जिन्होंने	झुठलाया	हमारी निशानियों को	और मुलाक़ात को	आख़िरत की	ज़ाया हो गए	आमाल उनके

هَلْ	يُجْزَوْنَ	اِلَّا	مَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ (147) ع	وَاتَّخَذَ
नहीं	वो बदला दिए जाऐंगे	मगर	जो	थे वो	वो अमल करते	और बना लिया

ع 17 6 7

قَوْمُ	مُوْسٰى	مِنْ بَعْدِهٖ	مِنْ حُلِيِّهِمْ	عِجْلًا	جَسَدًا	لَّهٗ
क़ौम ने	मूसा की	उसके पीछे से	अपने ज़ेवरात में से	एक बछड़ा	जिस्म वाला	उसकी

خُوَارٌ ؕ	اَلَمْ	يَرَوْا	اَنَّهٗ	لَا يُكَلِّمُهُمْ	وَلَا	يَهْدِيْهِمْ
गाय की आवाज़ थी	क्या नहीं	उन्होंने देखा	कि बेशक वो	नहीं वो कलाम करता था उनसे	और ना	वो रहनुमाई करता था उनकी

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم

سَبِيْلًا ۘ	اِتَّخَذُوْهُ	وَكَانُوْا	ظٰلِمِيْنَ (148)	وَلَمَّا	سُقِطَ
किसी रास्ते (की तरफ़)	उन्होंने बना लिया उसे (माबूद)	और थे वो	ज़ालिम	और जब	वो गिराए गए

فِيْٓ اَيْدِيْهِمْ	وَرَاَوْا	اَنَّهُمْ	قَدْ	ضَلُّوْا ۙ	قَالُوْا	لَئِنْ	لَّمْ
अपने हाथों में (नादिम हुए)	और उन्होंने देखा	कि बेशक वो	तहक़ीक़	वो भटक गए हैं	वो कहने लगे	यक़ीनन अगर	ना

يَرْحَمْنَا	رَبُّنَا	وَيَغْفِرْ	لَنَا	لَنَكُوْنَنَّ	مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (149)
रहम किया हम पर	हमारे रब ने	और ना उसने बख़्शिश फ़रमाई	हमारी	अलबत्ता हम ज़रूर हो जाएंगे	ख़सारा पाने वालों में से

وَلَمَّا	رَجَعَ	مُوْسٰٓى	اِلٰى قَوْمِهٖ	غَضْبَانَ	اَسِفًا ۙ	قَالَ
और जब	पलटा	मूसा	तरफ़ अपनी क़ौम के	बहुत गुस्से में	अफ़सोस करते हुए	उसने कहा

بِئْسَمَا	خَلَفْتُمُوْنِيْ	مِنْ بَعْدِيْ ۚ	اَعَجِلْتُمْ	اَمْرَ	رَبِّكُمْ ۚ
कितनी बुरी है जो	जानशीनी की तुमने मेरी	बाद मेरे	क्या जल्दी की तुमने	हुक्म से	अपने रब के

وَاَلْقَى	الْاَلْوَاحَ	وَاَخَذَ	بِرَاْسِ	اَخِيْهِ	يَجُرُّهٗٓ	اِلَيْهِ ۭ	قَالَ
और उसने डाल दीं	तख़्तियाँ	और उसने पकड़ लिया	सर	अपने भाई का	वो खींचने लगा उसे	तरफ़ अपने	उसने कहा

ابْنَ اُمَّ	اِنَّ	الْقَوْمَ	اسْتَضْعَفُوْنِيْ	وَكَادُوْا	يَقْتُلُوْنَنِيْ ښ	فَلَا
ऐ मेरी मां के बेटे	बेशक	उन लोगों ने	कमज़ोर समझा मुझे	और क़रीब था	वो क़त्ल कर देते मुझे	पस ना

تُشْمِتْ	بِيَ	الْاَعْدَاۗءَ	وَلَا	تَجْعَلْنِيْ	مَعَ الْقَوْمِ	الظّٰلِمِيْنَ (150)
तू हंसा	मुझ पर	दुश्मनों को	और ना	तू शामिल कर मुझे	साथ उन लोगों के	जो ज़ालिम हैं

قَالَ	رَبِّ	اغْفِرْ	لِيْ	وَلِاَخِيْ	وَاَدْخِلْنَا	فِيْ رَحْمَتِكَ ښ	وَاَنْتَ
कहा	ऐ मेरे रब	बख़्शदे	मुझे	और मेरे भाई को	और दाख़िल कर हमें	अपनी रहमत में	और तू

اَرْحَمُ	الرّٰحِمِيْنَ (151) ع	اِنَّ	الَّذِيْنَ	اتَّخَذُوا	الْعِجْلَ
सबसे ज़्यादा रहम वाला है	सब रहम करने वालों से	बेशक	वो लोग जिन्होंने	बना लिया	बछड़े को (माबूद)

ع 18 4 8

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

الدُّنْيَا ط	فِي الْحَيٰوةِ	وَذِلَّةٌ	مِّنْ رَّبِّهِمْ	غَضَبٌ	سَيَنَالُهُمْ
दुनिया की	ज़िंदगी में	और रुस्वाई	अपने रब की तरफ़ से	ग़ज़ब	अनक़रीब पहुंचेगा उन्हें

ثُمَّ	السَّيِّاٰتِ	عَمِلُوا	وَالَّذِيْنَ	الْمُفْتَرِيْنَ (152)	نَجْزِي	وَكَذٰلِكَ
फिर	बुरे	जिन्होंने अमल किए	और वो लोग	झूठ बांधने वालों को	हम बदला देते हैं	और इसी तरह

لَغَفُوْرٌ	مِنْ بَعْدِهَا	رَبَّكَ	اِنَّ	وَاٰمَنُوْٓا ز	مِنْ بَعْدِهَا	تَابُوْا
अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला है	बाद उसके	रब आपका	बेशक	और वो ईमान ले आए	बाद उसके	तौबा कर ली

اَخَذَ	الْغَضَبُ	عَنْ مُّوْسَى	سَكَتَ	وَلَمَّا	رَّحِيْمٌ (153)
उसने ले लीं	ग़ज़ब	मूसा से	थम गया	और जब	निहायत रहम करने वाला है

لِرَبِّهِمْ	هُمْ	لِّلَّذِيْنَ	وَّرَحْمَةٌ	هُدًى	وَفِيْ نُسْخَتِهَا	الْاَلْوَاحَ صلے
अपने रब से	वो जो	उन लोगों के लिए	और रहमत थी	हिदायत	और उनकी तहरीर में	तख़्तियां

رَجُلًا	سَبْعِيْنَ	قَوْمَهٗ	مُوْسٰى	وَاخْتَارَ	يَرْهَبُوْنَ (154)
आदमी	सत्तर	अपनी क़ौम से	मूसा ने	और मुंतख़िब कर लिए	वो डरते हैं

لَوْ	رَبِّ	قَالَ	الرَّجْفَةُ	اَخَذَتْهُمُ	فَلَمَّآ	لِّمِيْقَاتِنَا ج
अगर	ऐ मेरे रब	उसने कहा	ज़लज़ले ने	पकड़ लिया उन्हें	फिर जब	हमारे मुक़र्रर वक़्त के लिए

فَعَلَ	بِمَا	اَتُهْلِكُنَا	وَاِيَّايَ ط	مِّنْ قَبْلُ	اَهْلَكْتَهُمْ	شِئْتَ
किया	बवजह उसके जो	क्या तू हलाक करता हमें	और मुझे भी	इससे पहले	हलाक कर देता तू इन्हें	चाहता तू

بِهَا	تُضِلُّ	فِتْنَتُكَ ط	اِلَّا	هِيَ	اِنْ	مِنَّا ج	السُّفَهَآءُ
साथ इसके	तू गुमराह करता है	आज़माइश तेरी	मगर	ये	नहीं है	हम में से	कुछ नादानों ने

فَاغْفِرْ	وَلِيُّنَا	اَنْتَ	تَشَآءُ ط	مَنْ	وَتَهْدِيْ	تَشَآءُ	مَنْ
पस बख़्श दे	दोस्त है हमारा	तू ही	तू चाहता है	जिसे	और तू हिदायत देता है	तू चाहता है	जिसे

© AL-HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

لَنَا	وَارْحَمْنَا	وَاَنْتَ	خَيْرُ	الْغٰفِرِيْنَ (155)	وَاكْتُبْ	لَنَا
हमें	और रहम फ़रमा हम पर	और तू	बेहतर है	सब बख़्शने वालों से	और लिख दे	हमारे लिए

فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا	حَسَنَةً	وَّفِي الْاٰخِرَةِ	اِنَّا	هُدْنَآ	اِلَيْكَ ؕ
इस दुनिया में	भलाई	और आख़िरत में	बेशक हम	रुजूअ किया हमने	तेरी तरफ़

قَالَ	عَذَابِيْٓ	اُصِيْبُ	بِهٖ	مَنْ	اَشَآءُ ۚ	وَرَحْمَتِيْ	وَسِعَتْ
फ़रमाया	अज़ाब मेरा	मैं पहुंचाता हूं	उसको	जिसे	मैं चाहता हूं	और रहमत मेरी	छाई हुई है

كُلَّ	شَيْءٍ ؕ	فَسَاَكْتُبُهَا	لِلَّذِيْنَ	يَتَّقُوْنَ	وَيُؤْتُوْنَ
हर	चीज़ पर	पस ज़रूर मैं लिख दुंगा उसे	उन लोगों के लिए जो	डरते हैं	और वो अदा करते हैं

الزَّكٰوةَ	وَالَّذِيْنَ	هُمْ	بِاٰيٰتِنَا	يُؤْمِنُوْنَ (156) ۚ	اَلَّذِيْنَ	يَتَّبِعُوْنَ
ज़कात	और वो जो	वो	हमारी आयात पर	वो ईमान लाते हैं	वो लोग जो	पैरवी करेंगे

الرَّسُوْلَ	النَّبِيَّ	الْاُمِّيَّ	الَّذِيْ	يَجِدُوْنَهٗ	مَكْتُوْبًا	عِنْدَهُمْ
उस रसूल	नबी की	जो उम्मी है	वो जो	वो पाते हैं उसे	लिखा हुआ	अपने पास

فِي التَّوْرٰىةِ	وَالْاِنْجِيْلِ ۫	يَاْمُرُهُمْ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَيَنْهٰىهُمْ
तौरात में	और इंजील में	वो हुक्म देता है उन्हें	नेकी का	और वो रोकता है उन्हें

عَنِ الْمُنْكَرِ	وَيُحِلُّ	لَهُمُ	الطَّيِّبٰتِ	وَيُحَرِّمُ	عَلَيْهِمُ	الْخَبٰٓئِثَ
मुंकर/बुराई से	और वो हलाल करता है	उनके लिए	पाकीज़ा चीज़ें	और वो हराम करता है	उन पर	नापाक चीज़ें

وَيَضَعُ	عَنْهُمْ	اِصْرَهُمْ	وَالْاَغْلٰلَ	الَّتِيْ	كَانَتْ	عَلَيْهِمْ ؕ	فَالَّذِيْنَ
और वो उतारता है	उनसे	बोझ उनके	और वो तौक़	वो जो	थे वो	उन पर	पस वो जो

اٰمَنُوْا	بِهٖ	وَعَزَّرُوْهُ	وَنَصَرُوْهُ	وَاتَّبَعُوا	النُّوْرَ	الَّذِيْٓ
ईमान लाए	उस पर	और उन्होंने क़ुव्वत दी उसे	और उन्होंने मदद की उसकी	और उन्होंने पैरवी की	उस नूर की	वो जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 19 6 9

اُنْزِلَ	مَعَهٗٓ ۙ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُفْلِحُوْنَ ﴿157﴾ ع	قُلْ	يٰٓاَيُّهَا	النَّاسُ
नाज़िल किया गया	साथ उसके	यही लोग हैं	वो	जो फ़लाह पाने वाले हैं	कह दीजिए	ऐ	लोगो

اِنِّىْ	رَسُوْلُ	اللّٰهِ	اِلَيْكُمْ	جَمِيْعَا	الَّذِىْ	لَهٗ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ
बेशक मैं	रसूल हूं	अल्लाह का	तरफ़ तुम्हारे	सब के	वो ही है	जिसके लिए	बादशाहत है	आसमानों की

وَالْاَرْضِ ۚ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ	يُحْىٖ	وَيُمِيْتُ ۖ	فَاٰمِنُوْا
और ज़मीन की	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	वो ज़िंदा करता है	और वो मौत देता है	पस ईमान लाओ

بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهِ	النَّبِىِّ	الْاُمِّىِّ	الَّذِىْ	يُؤْمِنُ	بِاللّٰهِ	وَكَلِمٰتِهٖ
अल्लाह पर	और उसके रसूल पर	जो नबी	उम्मी है	वो जो	ईमान रखता है	अल्लाह पर	और उसके कलिमात पर

وَاتَّبِعُوْهُ	لَعَلَّكُمْ	تَهْتَدُوْنَ ﴿158﴾	وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى	اُمَّةٌ
और इत्तिबा करो उसका	ताकि तुम	तुम हिदायत पा जाओ	और मूसा की क़ौम में से	एक गिरोह था

يَّهْدُوْنَ	بِالْحَقِّ	وَبِهٖ	يَعْدِلُوْنَ ﴿159﴾	وَقَطَّعْنٰهُمُ	اثْنَتَىْ عَشْرَةَ
वो रहनुमाई करते	साथ हक़ के	और साथ उसी के	वो अदल करते	और अलग-अलग कर दिया हमने उन्हें	बारह

اَسْبَاطًا	اُمَمًا ۚ	وَاَوْحَيْنَآ	اِلٰى مُوْسٰٓى	اِذِ	اسْتَسْقٰهُ	قَوْمُهٗٓ
क़बीलों में	जमाअतें बनाकर	और वही की हमने	तरफ़ मूसा के	जब	पानी मांगा उससे	उसकी क़ौम ने

اَنِ	اضْرِبْ	بِّعَصَاكَ	الْحَجَرَ ۚ	فَانْبَجَسَتْ	مِنْهُ	اثْنَتَا عَشْرَةَ
कि	मार	असा अपना	पत्थर पर	पस फूट निकले	उससे	बारह

عَيْنًا ۚ	قَدْ	عَلِمَ	كُلُّ	اُنَاسٍ	مَّشْرَبَهُمْ ۚ	وَظَلَّلْنَا	عَلَيْهِمُ
चश्मे	तहक़ीक़	जान लिया	हर	गिरोह ने	घाट अपना	और साया किया हमने	उन पर

الْغَمَامَ	وَاَنْزَلْنَا	عَلَيْهِمُ	الْمَنَّ	وَالسَّلْوٰى ۚ	كُلُوْا	مِنْ طَيِّبٰتِ
बादलों का	और नाज़िल किया हमने	उन पर	मन्न	और सलवा	खाओ	पाकीज़ा चीज़ों में से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْفُسَهُمْ	كَانُوْٓا	وَلٰكِنْ	ظَلَمُوْنَا	وَمَا	رَزَقْنٰكُمْ ؕ	مَا
अपनी ही जानों पर	थे वो	और लेकिन	उन्होंने ज़ुल्म किया हम पर	और नहीं	अता कीं हमने तुम्हें	जो

وَ كُلُوْا	الْقَرْيَةَ	هٰذِهِ	اسْكُنُوْا	لَهُمُ	قِيْلَ	وَاِذْ	يَظْلِمُوْنَ (160)
और खाओ	बस्ती में	इस	तुम ठहरो/रहो	उनसे	कहा गया	और जब	वो ज़ुल्म करते

الْبَابَ	وَّادْخُلُوا	حِطَّةٌ	وَقُوْلُوْا	شِئْتُمْ	حَيْثُ	مِنْهَا
दरवाज़े से	और दाख़िल हो जाओ	बख़्श दे/حطۃ	और कहो	चाहो तुम	जहां से	उसमें से

الْمُحْسِنِيْنَ (161)	سَنَزِيْدُ	خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ ؕ	لَكُمْ	نَّغْفِرْ	سُجَّدًا
एहसान करने वालों को	अनक़रीब हम ज़्यादा देंगे	ख़ताऐं तुम्हारी	तुम्हारे लिए	हम बख़्श देंगे	सज्दा करते हुए

قِيْلَ	الَّذِيْ	غَيْرَ	قَوْلًا	مِنْهُمْ	ظَلَمُوْا	الَّذِيْنَ	فَبَدَّلَ
कही गई थी	उसके जो	सिवाय	बात को	उनमें से	ज़ुल्म किया	उन लोगों ने जिन्होंने	पस बदल दिया

كَانُوْا	بِمَا	مِّنَ السَّمَآءِ	رِجْزًا	عَلَيْهِمْ	فَاَرْسَلْنَا	لَهُمْ
थे वो	बवजह उसके जो	आसमान से	अज़ाब	उन पर	तो भेजा हमने	उन्हें

ع 5 20 10 وقف لازم

الْبَحْرِ ۘ	حَاضِرَةَ	كَانَتْ	الَّتِيْ	عَنِ الْقَرْيَةِ	وَسْئَلْهُمْ	يَظْلِمُوْنَ (162) ع
समुन्दर के	किनारे पर	थी वो	वो जो	उस बस्ती के बारे में	और पूछिए उनसे	वो ज़ुल्म करते

يَوْمَ سَبْتِهِمْ	حِيْتَانُهُمْ	تَاْتِيْهِمْ	اِذْ	فِي السَّبْتِ	يَعْدُوْنَ	اِذْ
दिन उनके हफ़्ते के	मछलियां उनकी	आती थीं उनके पास	जब	सब्त/हफ़्ते के दिन में	वो ज़्यादती करते थे	जब

معانقة 6

نَبْلُوْهُمْ	كَذٰلِكَ ۛ	لَا تَاْتِيْهِمْ ۛ	لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ	وَّيَوْمَ	شُرَّعًا
हम आज़माते थे उन्हें	इसी तरह	नहीं वो आती थीं उनके पास	वो सब्त/हफ़्ते का दिन ना मनाते	और जिस दिन	ज़ाहिर हो कर

النصف

لِمَ	مِّنْهُمْ	اُمَّةٌ	قَالَتْ	وَاِذْ	يَفْسُقُوْنَ (163)	كَانُوْا	بِمَا
क्यों	उनमें से	एक जमाअत ने	कहा	और जब	वो नाफ़रमानी करते	थे वो	बवजह उसके जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَعِظُوْنَ	قَوْمًا ۙ	اللّٰهُ	مُهْلِكُهُمْ	اَوْ	مُعَذِّبُهُمْ	عَذَابًا
तुम नसीहत करते हो	ऐसी क़ौम को	अल्लाह	हलाक करने वाला है जिन्हें	या	अज़ाब देने वाला है जिन्हें	अज़ाब

شَدِيْدًا ؕ	قَالُوْا	مَعْذِرَةً	اِلٰى رَبِّكُمْ	وَلَعَلَّهُمْ	يَتَّقُوْنَ (164)
शदीद	उन्होंन कहा	मआज़रत (करने के लिए)	तरफ़ तुम्हारे रब के	और शायद कि वो	वो डर जाएं

فَلَمَّا	نَسُوْا	مَا	ذُكِّرُوْا	بِهٖۤ	اَنْجَيْنَا	الَّذِيْنَ	يَنْهَوْنَ
फिर जब	वो भूल गए	जो	वो नसीहत किए गए थे	जिसकी	निजात दी हमने	उन्हें जो	वो रोकते थे

عَنِ السُّوْٓءِ	وَاَخَذْنَا	الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	بِعَذَابٍۭ	بَئِيْسٍۭ	بِمَا
बुराई से	और पकड़ लिया हमने	उनको जिन्होंने	ज़ुल्म किया	साथ अज़ाब	सख़्त के	बवजह उसके जो

كَانُوْا	يَفْسُقُوْنَ (165)	فَلَمَّا	عَتَوْا	عَنْ	مَّا	نُهُوْا	عَنْهُ
थे वो	वो नाफ़रमानी करते	फिर जब	उन्होंने सरकशी की	उससे	जो	वो रोके गए थे	जिससे

قُلْنَا	لَهُمْ	كُوْنُوْا	قِرَدَةً	خٰسِـِٕيْنَ (166)	وَاِذْ	تَاَذَّنَ	رَبُّكَ
कहा हमने	उन्हें	हो जाओ	बंदर	ज़लील	और जब	खबर दी	आपके रब ने

لَيَبْعَثَنَّ	عَلَيْهِمْ	اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ	مَنْ	يَّسُوْمُهُمْ	سُوْٓءَ	الْعَذَابِ ؕ
अलबत्ता वो ज़रूर भेजेगा	उन पर	क़यामत के दिन तक	उसे जो	चखाएगा उन्हें	बुरा	अज़ाब

اِنَّ	رَبَّكَ	لَسَرِيْعُ	الْعِقَابِ ۖۚ	وَاِنَّهٗ	لَغَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (167)
बेशक	रब आपका	अलबत्ता जल्द देने वाला है	सज़ा	और बेशक वो है	अलबत्ता बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला

وَقَطَّعْنٰهُمْ	فِى الْاَرْضِ	اُمَمًا ۚ	مِنْهُمُ	الصّٰلِحُوْنَ	وَمِنْهُمْ
और टुकड़े-टुकड़े कर दिया हमने उनहें	ज़मीन में	गिरोह-गिरोह (बना कर)	उनमें से कुछ	नेक हैं	और उनमें से कुछ

دُوْنَ ذٰلِكَ ؗ	وَبَلَوْنٰهُمْ	بِالْحَسَنٰتِ	وَالسَّيِّاٰتِ	لَعَلَّهُمْ
इसके इलावा हैं	और आज़माया हमने उन्हें	साथ अच्छाइयों	और बुराइयों के	शायद कि वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَرْجِعُوْنَ ﴿168﴾	فَخَلَفَ	مِنْۢ بَعْدِهِمْ	خَلْفٌ	وَّرِثُوا	الْكِتٰبَ
वो रुजूअ करें	तो पीछे आए	बाद उनके	नाख़ल्फ़	जो वारिस हुए	किताब के

يَاْخُذُوْنَ	عَرَضَ	هٰذَا	الْاَدْنٰى	وَيَقُوْلُوْنَ	سَيُغْفَرُ	لَنَاۚ
वो ले लेते हैं	मालो मता	इस	हक़ीर दुनिया का	और वो कहते हैं	ज़रूर बख़्श दिया जाएगा	हमें

وَاِنْ	يَّاْتِهِمْ	عَرَضٌ	مِّثْلُهٗ	يَاْخُذُوْهُ ؕ	اَلَمْ	يُؤْخَذْ	عَلَيْهِمْ
और अगर	आता है उनके पास	मालो मताअ	मानिंद उसी के	वो लेते हैं उसे	क्या नहीं	लिया गया	उनसे

مِّيْثَاقُ	الْكِتٰبِ	اَنْ	لَّا يَقُوْلُوْا	عَلَى اللّٰهِ	اِلَّا	الْحَقَّ	وَدَرَسُوْا
पुख़्ता अहद	किताब में	कि	ना वो कहें	अल्लाह पर	सिवाए	हक़ के	और उन्होंने पढ़ लिया था

مَا	فِيْهِ ؕ	وَالدَّارُ	الْاٰخِرَةُ	خَيْرٌ	لِّلَّذِيْنَ	يَتَّقُوْنَ ؕ	اَفَلَا
जो	उसमें है	और घर	आख़िरत का	बेहतर है	उनके लिए जो	डरते हैं	क्या भला नहीं

تَعْقِلُوْنَ ﴿169﴾	وَالَّذِيْنَ	يُمَسِّكُوْنَ	بِالْكِتٰبِ	وَاَقَامُوا	الصَّلٰوةَ ؕ
तुम अक़्ल रखते	और वो जो	मज़बूती से पकड़ते हैं	किताब को	और वो क़ायम करते हैं	नमाज़ को

اِنَّا	لَا نُضِيْعُ	اَجْرَ	الْمُصْلِحِيْنَ ﴿170﴾	وَاِذْ	نَتَقْنَا	الْجَبَلَ	فَوْقَهُمْ
बेशक हम	नहीं हम ज़ाया करते	अजर	इस्लाह करने वालों का	और जब	उठाया हमने	पहाड़ को	ऊपर उनके

كَاَنَّهٗ	ظُلَّةٌ	وَّظَنُّوْٓا	اَنَّهٗ	وَاقِعٌۢ	بِهِمْ ۚ	خُذُوْا	مَآ
गोया कि वो	एक सायबान था	और उन्होंने समझ लिया	कि बेशक वो	गिरने वाला है	उन पर	पकड़ो	जो

21 ع 9 11

اٰتَيْنٰكُمْ	بِقُوَّةٍ	وَّاذْكُرُوْا	مَا	فِيْهِ	لَعَلَّكُمْ	تَتَّقُوْنَ ﴿171﴾ ع	وَاِذْ
दिया हमने तुम्हें	साथ क़ुव्वत के	और याद करो	जो	इसमें है	ताकि तुम	तुम मुत्तक़ी बन जाओ	और जब

اَخَذَ	رَبُّكَ	مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ	مِنْ ظُهُوْرِهِمْ	ذُرِّيَّتَهُمْ	وَاَشْهَدَهُمْ
लिया	आपके रब ने	बनी आदम से	उनकी पुश्तों से	उनकी औलद को	और गवाह बनाया उनको

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

معانقة 7

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ ۚ	اَلَسْتُ	بِرَبِّكُمْ ۗ	قَالُوْا	بَلٰى ۛ	شَهِدْنَا ۛ	اَنْ
अपने नफ़्सों पर	(फ़रमाया) क्या नहीं हूं मैं	रब तुम्हारा	उन्होंने कहा	क्यों नहीं	गवाही दी हमने	ताकि (ना)

تَقُوْلُوْا	يَوْمَ الْقِيٰمَةِ	اِنَّا	كُنَّا	عَنْ هٰذَا	غٰفِلِيْنَ ۙ (172)	اَوْ
तुम कहो	क़यामत के दिन	बेशक हम	थे हम	उससे	ग़ाफ़िल	या

تَقُوْلُوْٓا	اِنَّمَآ	اَشْرَكَ	اٰبَآؤُنَا	مِنْ قَبْلُ	وَكُنَّا	ذُرِّيَّةً
तुम कहो	बेशक	शिर्क किया था	हमारे आबा ओ अजदाद ने	इससे पहले	और थे हम	औलाद

مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ	اَفَتُهْلِكُنَا	بِمَا	فَعَلَ	الْمُبْطِلُوْنَ (173)	وَكَذٰلِكَ
उनके बाद वालों की	क्या पस तू हलाक करता है हमें	बवजह उसके जो	किया	ग़लतकारों ने	और इसी तरह

نُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	وَلَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ (174)	وَاتْلُ	عَلَيْهِمْ
हम खोल कर बयान करते हैं	आयात	और ताकि वो	वो रुजूअ कर लें	और पढ़िए	उन पर

نَبَاَ	الَّذِيْٓ	اٰتَيْنٰهُ	اٰيٰتِنَا	فَانْسَلَخَ	مِنْهَا	فَاَتْبَعَهُ	الشَّيْطٰنُ
ख़बर	उस शख़्स की	दीं हमने उसको	आयात अपनी	पस वो निकल गया	उनसे	फिर पीछे लग गया उसके	शैतान

فَكَانَ	مِنَ الْغٰوِيْنَ (175)	وَلَوْ	شِئْنَا	لَرَفَعْنٰهُ	بِهَا	وَلٰكِنَّهٗٓ
तो वो हो गया	गुमराहों में से	और अगर	चाहते हम	अलबत्ता बुलन्द करते हम उसे	साथ उनके	और लेकिन वो

اَخْلَدَ	اِلَى الْاَرْضِ	وَاتَّبَعَ	هَوٰىهُ ۚ	فَمَثَلُهٗ	كَمَثَلِ	الْكَلْبِ ۚ
वो झुक गया	तरफ़ ज़मीन के	और उसने पैरवी की	अपनी ख़्वाहिशात की	तो मिसाल उसकी	मानिंद मिसाल	कुत्ते के है

اِنْ	تَحْمِلْ	عَلَيْهِ	يَلْهَثْ	اَوْ	تَتْرُكْهُ	يَلْهَثْ ۗ	ذٰلِكَ	مَثَلُ
अगर	तू हमला करे	उस पर	वो ज़बान लटकाता है	या	तू छोड़ दे उसे	वो ज़बान लटकाता है	ये	मिसाल है

الْقَوْمِ	الَّذِيْنَ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا ۚ	فَاقْصُصِ	الْقَصَصَ	لَعَلَّهُمْ
उस क़ौम की	जिन्होंने	झुठलाया	हमारी आयात को	पस बयान कीजिए	वाक़ियात	ताकि वो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاٰيٰتِنَا	كَذَّبُوْا	الَّذِيْنَ	الْقَوْمُ	مَثَلًا	سَآءَ	يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿176﴾
हमारी अयात को	झुठलाया	जिन्होंने	उन लोगों की	मिसाल	कितनी बुरी है	वो ग़ौरो फ़िक्र करें

فَهُوَ	اللّٰهُ	يَّهْدِ	مَنْ	يَظْلِمُوْنَ ﴿177﴾	كَانُوْا	وَاَنْفُسَهُمْ
पस वो ही	अल्लाह	हिदायत बख़्शे	जिसे	वो ज़ुल्म करते	थे वो	और अपने ही नफ़्सों पर

وَلَقَدْ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿178﴾	هُمُ	فَاُولٰٓئِكَ	يُّضْلِلْ	وَمَنْ	الْمُهْتَدِيْ ج
और अलबत्ता तहक़ीक़	जो ख़सारा पाने वाले हैं	वो	पस यही लोग हैं	वो भटकादे	और जिसे	हिदायत पाने वाला है

قُلُوْبٌ	لَهُمْ	وَالْاِنْسِ ۖ	مِّنَ الْجِنِّ	كَثِيْرًا	لِجَهَنَّمَ	ذَرَاْنَا
दिल हैं	उनके	और इंसानों में से	जिन्नों में से	बहुत से	जहन्नम के लिए	पैदा किए हमने

بِهَا ز	لَّا يُبْصِرُوْنَ	اَعْيُنٌ	وَلَهُمْ	بِهَا ز	لَّا يَفْقَهُوْنَ
साथ उनके	नहीं वो देखते	आंखें हैं	और उनकी	साथ उनके	नहीं वो समझते

بَلْ	كَالْاَنْعَامِ	اُولٰٓئِكَ	بِهَا ط	لَّا يَسْمَعُوْنَ	اٰذَانٌ	وَلَهُمْ
बल्कि	मवेशियों की तरह हैं	यही लोग	साथ उनके	नहीं वो सुनते	कान हैं	और उनके

الْاَسْمَآءُ	وَلِلّٰهِ	الْغٰفِلُوْنَ ﴿179﴾	هُمُ	اُولٰٓئِكَ	اَضَلُّ ط	هُمْ
नाम	और अल्लाह ही के लिए है	जो ग़ाफ़िल हैं	वो	यही लोग हैं	ज़्यादा गुमराह हैं	वो

فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ط	يُلْحِدُوْنَ	الَّذِيْنَ	وَذَرُوا	بِهَا ص	فَادْعُوْهُ	الْحُسْنٰى
उनके नामों की	कज रवी करते हैं	उन्हें जो	और छोड़ दो	साथ उनके	पस पुकरो उसे	अच्छे-अच्छे

خَلَقْنَآ	وَمِمَّنْ	يَعْمَلُوْنَ ﴿180﴾	كَانُوْا	مَا	سَيُجْزَوْنَ
पैदा किया हमने	और उनमें से जिन्हें	वो अमल करते	थे वो	उसका जो	अनक़रीब वो बदला दिए जाएंगे

ع 22 10 12

كَذَّبُوْا	وَالَّذِيْنَ	يَعْدِلُوْنَ ع ﴿181﴾	وَبِهٖ	بِالْحَقِّ	يَّهْدُوْنَ	اُمَّةٌ
झुठलाया	और वो जिन्होंने	वो अदल करते हैं	और साथ उसी के	साथ हक़ के	वो रहनुमाई करते हैं	एक गिरोह है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاٰيٰتِنَا	سَنَسْتَدْرِجُهُمْ	مِّنْ حَيْثُ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿182﴾ ج	وَ اُمْلِيْ
हमारी आयात को	ज़रूर हम आहिस्ता-आहिस्ता पकड़ेंगे उन्हें	जहां से	नहीं वो इल्म रखते	और मैं मोहलत दे रहा हूं

لَهُمْ قف ط	اِنَّ	كَيْدِيْ	مَتِيْنٌ ﴿183﴾	اَوَ لَمْ	يَتَفَكَّرُوْا سكتة	مَا
उन्हें	बेशक	तदबीर मेरी	बहुत मज़बूत है	क्या भला नहीं	उन्होंने ग़ौरो फ़िक्र किया	नहीं है

بِصَاحِبِهِمْ	مِّنْ جِنَّةٍ ط	اِنْ	هُوَ	اِلَّا	نَذِيْرٌ	مُّبِيْنٌ ﴿184﴾	اَوَ لَمْ
उनके साथी को	कोई जुनून	नहीं	वो	मगर	डराने वाला	खुल्लम-खुल्ला	क्या भला नहीं

يَنْظُرُوْا	فِيْ مَلَكُوْتِ	السَّمٰوٰتِ	وَ الْاَرْضِ	وَ مَا	خَلَقَ	اللّٰهُ
उन्होंने देखा	बादशाहत में	आसमानों	और ज़मीन की	और जो भी	पैदा की	अल्लाह ने

مِنْ شَيْءٍ لا	وَّ اَنْ	عَسٰى	اَنْ	يَّكُوْنَ	قَدِ	اقْتَرَبَ	اَجَلُهُمْ ج
कोई चीज़	और ये कि	उम्मीद है	कि	हो	तहक़ीक़	क़रीब आ चुकी	मुद्दत उनकी

فَبِاَيِّ	حَدِيْثٍ	بَعْدَهٗ	يُؤْمِنُوْنَ ﴿185﴾	مَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَلَا
तो साथ किस	बात के	बाद उसके	वो ईमान लाएंगे	जिसे	भटका देता है	अल्लाह	पस नहीं

هَادِيَ	لَهٗ ط	وَ يَذَرُهُمْ	فِيْ طُغْيَانِهِمْ	يَعْمَهُوْنَ ﴿186﴾	يَسْئَلُوْنَكَ
कोई हिदायत देने वाला	उसे	और वो छोड़ देता है उन्हें	उनकी सरकशी में	वो सरगरदां फिरते हैं	वो पूछते हैं आपसे

عَنِ السَّاعَةِ	اَيَّانَ	مُرْسٰهَا ط	قُلْ	اِنَّمَا	عِلْمُهَا
उस घड़ी (क़यामत) के बारे में	कब है	ठहरना उसका	कह दीजिए	बेशक	इल्म उसका

عِنْدَ	رَبِّيْ ج	لَا يُجَلِّيْهَا	لِوَقْتِهَآ	اِلَّا	هُوَ م ط	ثَقُلَتْ	فِي السَّمٰوٰتِ
पास है	मेरे रब के	नहीं ज़ाहिर करेगा उसे	उसके वक़्त पर	मगर	वो ही	भारी होगी	आसमानों में

وقف لازم
وقف منزل

وَ الْاَرْضِ ط	لَا تَاْتِيْكُمْ	اِلَّا	بَغْتَةً ط	يَسْئَلُوْنَكَ	كَاَنَّكَ	حَفِيٌّ
और ज़मीन में	नहीं वो आएगी तुम्हारे पास	मगर	अचानक	वो पूछते हैं आपसे	गोया कि आप	पूरे बाख़बर हैं

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَنْهَا ط	قُلْ	اِنَّمَا	عِلْمُهَا	عِنْدَ	اللّٰهِ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ
उससे	कह दीजिए	बेशक	इल्म उसका	पास है	अल्लाह के	और लेकिन	अक्सर	लोग

لَا يَعْلَمُوْنَ (187)	قُلْ	لَّآ اَمْلِكُ	لِنَفْسِيْ	نَفْعًا	وَّلَا	ضَرًّا
नहीं वो जानते	कह दीजिए	नहीं हूं मैं मालिक	अपने नफ़्स के लिए	किसी नफ़ा का	और ना	किसी नुक़्सान का

اِلَّا	مَا	شَآءَ	اللّٰهُ ط	وَلَوْ	كُنْتُ	اَعْلَمُ	الْغَيْبَ	لَاسْتَكْثَرْتُ
मगर	जो	चाहे	अल्लाह	और अगर	होता मैं	मैं जानता	ग़ैब को	अलबत्ता कसरत से ले लेता मैं

مِنَ الْخَيْرِ ۚ	وَمَا	مَسَّنِيَ	السُّوْٓءُ ۚ	اِنْ	اَنَا	اِلَّا	نَذِيْرٌ	وَّبَشِيْرٌ
भलाई में से	और ना	पहुंचती मुझे	कोई तकलीफ़	नहीं हूं	मैं	मगर	डराने वाला	और ख़ुशख़बरी देने वाला

لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ (188) ع	هُوَ	الَّذِيْ	خَلَقَكُمْ	مِّنْ نَّفْسٍ	وَّاحِدَةٍ
उन लोगों के लिए	जो ईमान लाते हैं	वो ही है	जिसने	पैदा किया तुम्हें	जान से	एक ही

وَّجَعَلَ	مِنْهَا	زَوْجَهَا	لِيَسْكُنَ	اِلَيْهَا ۚ	فَلَمَّا	تَغَشّٰهَا
और उसने बनाया	उस से	जोड़ा उसका	ताकि वो सुकून हासिल करे	तरफ़ उसके	फिर जब	उसने ढांप लिया उसे

حَمَلَتْ	حَمْلًا	خَفِيْفًا	فَمَرَّتْ	بِهٖ ۚ	فَلَمَّآ	اَثْقَلَتْ	دَّعَوَا
उसने उठाया	बोझ	हल्का	पस वो चलती रही	साथ उसके	फिर जब	वो बोझल हो गई	दोनों ने दुआ की

اللّٰهَ	رَبَّهُمَا	لَئِنْ	اٰتَيْتَنَا	صَالِحًا	لَّنَكُوْنَنَّ
अल्लाह से	जो रब है उन दोनों का	अलबत्ता अगर	दे दिया तूने हमें	सही सलामत (बच्चा)	अलबत्ता हम ज़रूर हो जाएंगे

مِنَ الشّٰكِرِيْنَ (189)	فَلَمَّآ	اٰتٰىهُمَا	صَالِحًا	جَعَلَا	لَهٗ
शुक्र करने वालों में से	तो जब	उसने दिया उन दोनों को	सही सलामत	उन दोनों ने बना लिए	उसके लिए

شُرَكَآءَ	فِيْمَآ	اٰتٰىهُمَا ۚ	فَتَعٰلَى	اللّٰهُ	عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ (190)
शरीक	उसमें जो	उसने दिया उन्हें	पस बुलंदतर है	अल्लाह	उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं

معانقة 8

ع 23 7 13

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

أَيُشْرِكُونَ	مَا	لَا يَخْلُقُ	شَيْـًٔا	وَّهُمْ	يُخْلَقُونَ ﴿191﴾ ۖ	وَلَا
क्या वो शरीक ठहराते हैं	उनको जो	नहीं वो पैदा कर सकते	कुछ भी	और वो	वो पैदा किए जाते हैं	और नहीं

يَسْتَطِيعُونَ	لَهُمْ	نَصْرًا	وَّلَآ	أَنفُسَهُمْ	يَنصُرُونَ ﴿192﴾	وَإِن
वो इस्तिताअत रखते	उनके लिए	किसी मदद की	और ना	अपने नफ़्सों की	वो मदद कर सकते हैं	और अगर

تَدْعُوهُمْ	إِلَى الْهُدَىٰ	لَا يَتَّبِعُوكُمْ ۚ	سَوَآءٌ	عَلَيْكُمْ	أَدَعَوْتُمُوهُمْ
तुम बुलाओ उन्हें	तरफ़ हिदायत के	नहीं वो पैरवी करेंगे तुम्हारी	यक्सां है	तुम पर	ख़्वाह तुम बुलाओ उन्हें

أَمْ	أَنتُمْ	صَامِتُونَ ﴿193﴾	إِنَّ	الَّذِينَ	تَدْعُونَ	مِن دُونِ	اللَّهِ
या	तुम	ख़ामोश रहो	बेशक	वो जिन्हें	तुम पुकारते हो	सिवाए	अल्लाह के

عِبَادٌ	أَمْثَالُكُمْ	فَادْعُوهُمْ	فَلْيَسْتَجِيبُوا	لَكُمْ	إِن	كُنتُمْ
बंदे हैं	तुम्हारी तरह के	पस पुकारो उन्हें	तो चाहिए कि वो जवाब दें	तुम्हें	अगर	हो तुम

صَادِقِينَ ﴿194﴾	أَلَهُمْ	أَرْجُلٌ	يَمْشُونَ	بِهَآ ۖ	أَمْ	لَهُمْ	أَيْدٍ
सच्चे	क्या उनके	पांव हैं	कि वो चलते हों	साथ उनके	या	उनके	हाथ हैं

يَبْطِشُونَ	بِهَآ ۖ	أَمْ	لَهُمْ	أَعْيُنٌ	يُبْصِرُونَ	بِهَآ ۖ	أَمْ
कि वो पकड़ते हों	साथ उनके	या	उनकी	आंखें हैं	कि वो देखते हों	साथ उनके	या

لَهُمْ	آذَانٌ	يَسْمَعُونَ	بِهَا ۗ	قُلِ	ادْعُوا	شُرَكَآءَكُمْ
उनके	कान हैं	कि वो सुनते हों	साथ उनके	कह दीजिए	पुकारो	अपने शरीकों को

ثُمَّ	كِيدُونِ	فَلَا	تُنظِرُونِ ﴿195﴾	إِنَّ	وَلِيِّيَ	اللَّهُ	الَّذِي
फिर	चाल चलो मेरे ख़िलाफ़	फिर ना	तुम मोहलत दो मुझे	बेशक	मेरा दोस्त	अल्लाह है	जिसने

نَزَّلَ	الْكِتَابَ ۖ	وَهُوَ	يَتَوَلَّى	الصَّالِحِينَ ﴿196﴾	وَالَّذِينَ	تَدْعُونَ
नाज़िल की है	किताब	और वो ही	दोस्त रखता है	सालेहीन को	और वो जिन्हें	तुम पुकारते हो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ دُوْنِهٖ	لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ	نَصْرَكُمْ	وَلَآ	اَنْفُسَهُمْ	يَنْصُرُوْنَ ﴿197﴾
उसके सिवा	नहीं वो इस्तिताअत रखते	तुम्हारी मदद की	और ना	अपने नफ़्सों की	वो मदद कर सकते हैं

وَاِنْ	تَدْعُوْهُمْ	اِلَى الْهُدٰى	لَا يَسْمَعُوْا ؕ	وَتَرٰىهُمْ	يَنْظُرُوْنَ
और अगर	तुम पुकारो उन्हें	तरफ़ हिदायत के	नहीं वो सुनेंगे	और आप देखेंगे उन्हें	कि वो देख रहे हैं

اِلَيْكَ	وَهُمْ	لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿198﴾	خُذِ	الْعَفْوَ	وَاْمُرْ	بِالْعُرْفِ
तरफ़ आपके	हालांकि वो	नहीं वो देख रहे	इख़्तियार कीजिए	दरगुज़र को	और हुक्म दीजिए	नेकी का

وَاَعْرِضْ	عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿199﴾	وَاِمَّا	يَنْزَغَنَّكَ	مِنَ الشَّيْطٰنِ	نَزْغٌ
और ऐराज़ कीजिए	जाहिलों से	और अगर	वसवसा आए आपको	शैतान की तरफ़ से	कोई वसवसा

فَاسْتَعِذْ	بِاللّٰهِ ؕ	اِنَّهٗ	سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ ﴿200﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ
पस पनाह तलब कीजिए	अल्लाह की	बेशक वो	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	बेशक	वो जिन्होंने

اتَّقَوْا	اِذَا	مَسَّهُمْ	طٰٓىِٕفٌ	مِّنَ الشَّيْطٰنِ	تَذَكَّرُوْا	فَاِذَا
तक़्वा किया	जब	छू जाता है उन्हें	कोई ख़्याल	शैतान की तरफ़ से	तो वो चौंक पड़ते हैं	फिर यकायक

هُمْ	مُّبْصِرُوْنَ ﴿201﴾ ج	وَاِخْوَانُهُمْ	يَمُدُّوْنَهُمْ	فِى الْغَىِّ	ثُمَّ
वो	देखने लगते हैं	और भाई उन (शैतानों) के	वो खींचते हैं उन्हें	गुमराही में	फिर

لَا يُقْصِرُوْنَ ﴿202﴾	وَاِذَا	لَمْ	تَاْتِهِمْ	بِاٰيَةٍ	قَالُوْا	لَوْلَا
नहीं वो कमी करते	और जब	नहीं	आप लाते उनके पास	कोई निशानी	वो कहते हैं	क्यों ना

اجْتَبَيْتَهَا ؕ	قُلْ	اِنَّمَآ	اَتَّبِعُ	مَا	يُوْحٰٓى	اِلَىَّ
चुन लाया तू उसे	कह दीजिए	बेशक	मैं पैरवी करता हूं	उसकी जो	वही की जाती है	तरफ़ मेरे

مِنْ رَّبِّىْ ج	هٰذَا	بَصَآىِٕرُ	مِنْ رَّبِّكُمْ	وَهُدًى	وَّرَحْمَةٌ
मेरे रब की तरफ़ से	ये	बसीरत की बातें हैं	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और हिदायत	और रहमत है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿203﴾	وَاِذَا	قُرِئَ	الْقُرْاٰنُ	فَاسْتَمِعُوْا	لَهٗ
उन लोगों के लिए	जो ईमान लाते हैं	और जब	पढ़ा जाए	क़ुरआन	पस ग़ौर से सुनो	उसे

وَاَنْصِتُوْا	لَعَلَّكُمْ	تُرْحَمُوْنَ ﴿204﴾	وَاذْكُرْ	رَّبَّكَ	فِيْ نَفْسِكَ
और ख़ामोश रहो	ताकि तुम	तुम रहम किए जाओ	और ज़िक्र कीजिए	अपने रब का	अपने दिल में

تَضَرُّعًا	وَّخِيْفَةً	وَّدُوْنَ	الْجَهْرِ	مِنَ الْقَوْلِ	بِالْغُدُوِّ
आजिज़ी	और ख़ौफ़ से	और बग़ैर	बुलंद	आवाज़ के	सुबह के वक़्त

وَالْاٰصَالِ	وَلَا	تَكُنْ	مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿205﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	عِنْدَ رَبِّكَ
और शाम के वक़्त	और ना	हों आप	ग़ाफ़िलों में से	बेशक	वो (फ़रिश्ते) जो	आपके रब के पास हैं

لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ	عَنْ عِبَادَتِهٖ	وَيُسَبِّحُوْنَهٗ	وَلَهٗ	يَسْجُدُوْنَ ﴿206﴾ السجدة ع
नहीं वो तकब्बुर करते	उसकी इबादत से	और वो तस्बीह करते हैं उसकी	और उसी को	वो सज्दा करते हैं

ع 24 18 14 السجدة 1

اٰيَاتُهَا: 75 — 8 سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ 88 — رُكُوْعَاتُهَا: 10

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَسْــَٔلُوْنَكَ	عَنِ الْاَنْفَالِ ط	قُلِ	الْاَنْفَالُ	لِلّٰهِ	وَالرَّسُوْلِ ج
वो सवाल करते हैं आपसे	ग़नीमतों के बारे में	कह दीजिए	ग़नीमतें	अल्लाह के लिए	और रसूल के लिए हैं

فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاَصْلِحُوْا	ذَاتَ بَيْنِكُمْ ص	وَاَطِيْعُوا	اللّٰهَ	وَرَسُوْلَهٗٓ
पस डरो	अल्लाह से	और इस्लाह करो	आपस में	और इताअत करो	अल्लाह की	और उसके रसूल की

اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿1﴾	اِنَّمَا	الْمُؤْمِنُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِذَا	ذُكِرَ
अगर	हो तुम	ईमान लाने वाले	बेशक	मोमिन तो	वो हैं	जब	ज़िक्र किया जाता है

اللّٰهُ	وَجِلَتْ	قُلُوْبُهُمْ	وَاِذَا	تُلِيَتْ	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُهٗ	زَادَتْهُمْ
अल्लाह का	डर जाते हैं	दिल उनके	और जब	पढ़ी जती हैं	उन पर	आयात उसकी	वो ज़्यादा कर देती हैं उन्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِيْمَانًا	وَّعَلٰى رَبِّهِمْ	يَتَوَكَّلُوْنَ ۚ (2)	الَّذِيْنَ	يُقِيْمُوْنَ	الصَّلٰوةَ
ईमान में	और अपने रब पर ही	वो तवक्कुल करते हैं	वो जो	क़ायम करते हैं	नमाज़

وَمِمَّا	رَزَقْنٰهُمْ	يُنْفِقُوْنَ ۗ (3)	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُؤْمِنُوْنَ	حَقًّا ۗ
और उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	वो ख़र्च करते हैं	यही लोग हैं	वो	जो मोमिन हैं	सच्चे

لَهُمْ	دَرَجٰتٌ	عِنْدَ رَبِّهِمْ	وَمَغْفِرَةٌ	وَّرِزْقٌ	كَرِيْمٌ ۚ (4)	كَمَآ
उनके लिए	दरजे हैं	उनके रब के पास	और बख़्शिश	और रिज़्क़ है	इज़्ज़त वाला	जैसा कि

اَخْرَجَكَ	رَبُّكَ	مِنْۢ بَيْتِكَ	بِالْحَقِّ ۠	وَاِنَّ	فَرِيْقًا
निकाला आपको	आपके रब ने	आपके घर से	साथ हक़ के	और बेशक	एक गिरोह

مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	لَكٰرِهُوْنَ ۙ (5)	يُجَادِلُوْنَكَ	فِي الْحَقِّ	بَعْدَ	مَا
मोमिनों में से	अलबत्ता नापसंद करने वाला था	वो झगड़ते थे आपसे	हक़ में	बाद	उसके जो

تَبَيَّنَ	كَاَنَّمَا	يُسَاقُوْنَ	اِلَى الْمَوْتِ	وَهُمْ	يَنْظُرُوْنَ ۗ (6)	وَاِذْ
वो वाज़ेह हो गया था	गोया कि	वो हांके जा रहे थे	तरफ़ मौत के	और वो	वो देख रहे थे	और जब

يَعِدُكُمُ	اللّٰهُ	اِحْدَى	الطَّآئِفَتَيْنِ	اَنَّهَا	لَكُمْ	وَتَوَدُّوْنَ
वादा कर रहा था तुमसे	अल्लाह	एक का	दो गिरोहों में से	बेशक वो	तुम्हारे लिए है	और तुम चाहते थे

اَنَّ	غَيْرَ	ذَاتِ الشَّوْكَةِ	تَكُوْنُ	لَكُمْ	وَيُرِيْدُ	اللّٰهُ	اَنْ
बेशक	बग़ैर	हथियार वाला	हो जाए	तुम्हारे लिए	और चाहता है	अल्लाह	कि

يُّحِقَّ	الْحَقَّ	بِكَلِمٰتِهٖ	وَيَقْطَعَ	دَابِرَ	الْكٰفِرِيْنَ ۙ (7)	لِيُحِقَّ
वो साबित कर दे	हक़ को	अपने कलिमात से	और वो काट डाले	जड़	काफ़िरों की	ताकि वो साबित करदे

الْحَقَّ	وَيُبْطِلَ	الْبَاطِلَ	وَلَوْ	كَرِهَ	الْمُجْرِمُوْنَ ۚ (8)	اِذْ
हक़ को	और वो बातिल करदे	बातिल को	और अगरचे	नापसंद करें	मुजरिम लोग	जब

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُمِدُّكُمْ	اَنِّيْ	لَكُمْ	فَاسْتَجَابَ	رَبَّكُمْ	تَسْتَغِيْثُوْنَ
मदद देने वाला हूं तुम्हें	कि बेशक मैं	तुम्हारी	तो उसने (दुआ) क़ुबूल कर ली	अपने रब से	तुम फरियाद कर रे थे

اِلَّا	اللّٰهُ	جَعَلَهُ	وَمَا	مُرْدِفِيْنَ ⑨	مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ	بِاَلْفٍ
मगर	अल्लाह ने	बनाया उसे	और नहीं	एक दूसरे के पीछे आने वाले	फ़ररश्तों के	साथ एक हज़ार

اِلَّا	النَّصْرُ	وَمَا	قُلُوْبُكُمْ ج	بِهٖ	وَلِتَطْمَئِنَّ	بُشْرٰى
मगर	मदद	और नहीं	दिल तुम्हारे	साथ उसके	और ताकि मुत्मइन हो जाएं	ख़ुशख़बरी

يُغَشِّيْكُمُ	اِذْ	حَكِيْمٌ ⑩ ع	عَزِيْزٌ	اللّٰهَ	اِنَّ	مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ط
उसने ढांप दी तुम पर	जब	ख़ूब हिक्मत वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	अल्लाह	बेशक	अल्लाह के पास से

ع 1 10 15

مَآءً	مِّنَ السَّمَآءِ	عَلَيْكُمْ	وَيُنَزِّلُ	مِّنْهُ	اَمَنَةً	النُّعَاسَ
पानी	आसमान से	तुम पर	और वो उतार रहा था	उसकी तरफ़ से	अमन के लिए	ऊंघ

وَلِيَرْبِطَ	الشَّيْطٰنِ	رِجْزَ	عَنْكُمْ	وَيُذْهِبَ	بِهٖ	لِّيُطَهِّرَكُمْ
और ताकि वो मज़्बूत करदे	शैतान की	नजासत	तुमसे	और वो ले जाए	साथ उसके	ताकि वो पाक कर दे तुम्हें

رَبُّكَ	يُوْحِيْ	اِذْ	الْاَقْدَامَ ⑪ ط	بِهِ	وَيُثَبِّتَ	عَلٰى قُلُوْبِكُمْ
रब आपका	वही कर रहा था	जब	क़दमों को	साथ उसके	और वो जमादे	तुम्हारे दिलों को

سَاُلْقِيْ	اٰمَنُوْا ط	الَّذِيْنَ	فَثَبِّتُوا	مَعَكُمْ	اَنِّيْ	اِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ
अनक़रीब मैं डाल दुंगा	ईमान लाए	उन्हें जो	पस साबित रखो	साथ हूं तुम्हारे	बेशक में	तरफ़ फ़रिश्तों के

الْاَعْنَاقِ	فَوْقَ	فَاضْرِبُوْا	الرُّعْبَ	كَفَرُوا	الَّذِيْنَ	فِيْ قُلُوْبِ
गर्दनों के	ऊपर	पस मारो	रोब को	कुफ़्र किया	उनके जिन्होंने	दिलों में

اللّٰهَ	شَآقُّوا	بِاَنَّهُمْ	ذٰلِكَ	بَنَانٍ ⑫ ط	كُلَّ	مِنْهُمْ	وَاضْرِبُوْا
अल्लाह की	मुख़ालिफ़त की	बवजह इसके कि उन्होंने	ये	पोर पर	हर	उनके	और मारो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

شَدِيْدُ	اللّٰهَ	فَاِنَّ	وَرَسُوْلَهٗ	اللّٰهَ	يُّشَاقِقِ	وَمَنْ	وَرَسُوْلَهٗ ج
सख़्त	अल्लाह	तो बेशक	और उसके रसूल की	अल्लाह की	मुख़ालिफ़त करेगा	और जो कोई	और उसके रसूल की

النَّارِ (14)	عَذَابَ	لِلْكٰفِرِيْنَ	وَاَنَّ	فَذُوْقُوْهُ	ذٰلِكُمْ	الْعِقَابِ (13)
आग का	अज़ाब है	काफ़िरों के लिए	और बेशक	पस चखो उसे	ये है (सज़ा)	सज़ा वाला है

زَحْفًا	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	لَقِيْتُمُ	اِذَا	اٰمَنُوْٓا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
मैदाने जंग में	कुफ़्र किया	उनसे जिन्होंने	मुलाक़ात करो तुम	जब	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

اِلَّا	دُبُرَهٗٓ	يَوْمَئِذٍ	يُّوَلِّهِمْ	وَمَنْ	الْاَدْبَارَ (15) ج	تُوَلُّوْهُمُ	فَلَا
सिवाए	पुश्त अपनी	उस दिन	फेरेगा उनसे	और जो कोई	पुश्तों को	तुम फेरो उनसे	पस ना

بِغَضَبٍ	بَآءَ	فَقَدْ	اِلٰى فِئَةٍ	مُتَحَيِّزًا	اَوْ	لِّقِتَالٍ	مُتَحَرِّفًا
साथ ग़ज़ब के	वो पलटा	तो तहक़ीक़	तरफ़ एक गिरोह के	पनाह लेने वाले के	या	जंग के लिए	पैंतरा बदलने वाले के

تَقْتُلُوْهُمْ	فَلَمْ	الْمَصِيْرُ (16)	وَبِئْسَ	جَهَنَّمُ ط	وَمَاْوٰىهُ	مِّنَ اللّٰهِ
तुमने क़त्ल किया उन्हें	तो नहीं	ठिकाना	और कितना बुरा है	जहन्नम है	और ठिकाना उसका	अल्लाह की तरफ़ से

وَلٰكِنَّ	رَمَيْتَ	اِذْ	رَمَيْتَ	وَمَا	قَتَلَهُمْ ص	اللّٰهَ	وَلٰكِنَّ
और लेकिन	फैंका था आपने	जब	फैंका आपने	और नहीं	क़त्ल किया उन्हें	अल्लाह ने	और लेकिन

اللّٰهَ	اِنَّ	حَسَنًا ط	بَلَآءً	مِنْهُ	الْمُؤْمِنِيْنَ	وَلِيُبْلِيَ	رَمٰى ج	اللّٰهَ
अल्लाह	बेशक	अच्छी से	आज़माइश	अपनी तरफ़ से	मोमिनों को	और ताकि वो आज़माए	फैंका था	अल्लाह ने

الْكٰفِرِيْنَ (18)	كَيْدِ	مُوْهِنُ	اللّٰهَ	وَاَنَّ	ذٰلِكُمْ	عَلِيْمٌ (17)	سَمِيْعٌ
काफ़िरों की	चाल को	कमज़ोर करने वाला है	अल्लाह	और बेशक	ये है	ख़ूब जानने वाला है	ख़ूब सुनने वाला है

فَهُوَ	تَنْتَهُوْا	وَاِنْ	الْفَتْحُ ج	جَآءَكُمُ	فَقَدْ	تَسْتَفْتِحُوْا	اِنْ
तो वो	तुम बाज़ आजाओ	और अगर	फ़ैसला	आ गया तुम्हारे पास	तो तहक़ीक़	तुम फ़ैसला चाहते हो	अगर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَنْكُمْ	تُغْنِيَ	وَلَنْ	نَعُدْ ج	تَعُوْدُوْا	وَاِنْ	لَّكُمْ ج	خَيْرٌ
तुम्हें	काम आएगा	और हरगिज़ ना	हम भी लौटेंगे	तुम लौटोगे	और अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर है

ع 2 9 16

الْمُؤْمِنِيْنَ (19) ع	مَعَ	اللّٰهَ	وَاَنَّ	كَثُرَتْ لا	وَّلَوْ	شَيْـًٔا	فِئَتُكُمْ
ईमान लाने वालों के	साथ है	अल्लाह	और बेशक	वो बकसरत हों	और अगरचे	कुछ भी	गिरोह तुम्हारा

عَنْهُ	تَوَلَّوْا	وَلَا	وَرَسُوْلَهٗ	اللّٰهَ	اَطِيْعُوا	اٰمَنُوْٓا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
उससे	तुम मुंह फेरो	और ना	और उसके रसूल की	अल्लाह की	इताअत करो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

وَهُمْ	سَمِعْنَا	قَالُوْا	كَالَّذِيْنَ	تَكُوْنُوْا	وَلَا	تَسْمَعُوْنَ (20) ج	وَاَنْتُمْ
हालांकि वो	सुना हमने	कहा	उनकी तरह जिन्होंने	तुम हो जाओ	और ना	तुम सुन रहे हो	जबकि तुम

الَّذِيْنَ	الْبُكْمُ	الصُّمُّ	عِنْدَ اللّٰهِ	الدَّوَآبِّ	شَرَّ	اِنَّ	لَا يَسْمَعُوْنَ (21)
जो	गूंगे हैं	वो बेहरे	अल्लाह के नज़्दीक	जानदार	बदतरीन	बेशक	नहीं वो सुनते

وَلَوْ	لَّاَسْمَعَهُمْ ط	خَيْرًا	فِيْهِمْ	اللّٰهُ	عَلِمَ	وَلَوْ	لَا يَعْقِلُوْنَ (22)
और अगर	अलबत्ता वो सुनवा देता उन्हें	कोई भलाई	उनमें	अल्लाह	जान लेता	और अगर	नहीं वो अक़्ल से काम लेते

اٰمَنُوا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	مُّعْرِضُوْنَ (23)	وَّهُمْ	لَتَوَلَّوْا	اَسْمَعَهُمْ
ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	ऐराज़ करने वाले	और वो हैं ही	यक़ीनन वो मुंह फेर जाते	वो सुनवा देता उन्हें

يُحْيِيْكُمْ ج	لِمَا	دَعَاكُمْ	اِذَا	وَلِلرَّسُوْلِ	لِلّٰهِ	اسْتَجِيْبُوْا
ज़िंदगी बख़्शता है तुम्हें	उसके लिए जो	वो पुकारे तुम्हें	जब	और रसूल का	अल्लाह का	क़ुबूल कर लो (हुक्म)

اِلَيْهِ	وَاَنَّهٗٓ	وَقَلْبِهٖ	الْمَرْءِ	بَيْنَ	يَحُوْلُ	اللّٰهَ	اَنَّ	وَاعْلَمُوْٓا
तरफ़ उसी के	और बेशक वो	और उसके दिल के	आदमी	दर्मियान	वो हाइल होता है	अल्लाह	बेशक	और जान लो

مِنْكُمْ	ظَلَمُوْا	الَّذِيْنَ	لَا تُصِيْبَنَّ	فِتْنَةً	وَاتَّقُوْا	تُحْشَرُوْنَ (24)
तुम में से	ज़ुल्म किया	उन्हें जिन्होंने	जो हरगिज़ ना पहुंचेगा	उस फ़ितने से	और डरो	तुम इकट्ठे किए जाओगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

خَآصَّةً ۚ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	شَدِيْدُ	الْعِقَابِ ﴿25﴾	وَاذْكُرُوْٓا	اِذْ
खासकर	और जान लो	बेशक	अल्लाह	सख़्त	सज़ा वाला है	और याद करो	जब

اَنْتُمْ	قَلِيْلٌ	مُّسْتَضْعَفُوْنَ	فِى الْاَرْضِ	تَخَافُوْنَ	اَنْ	يَّتَخَطَّفَكُمُ
तुम	थोड़े थे	कमज़ोर समझे जाते थे	ज़मीन में	तुम डरते थे	कि	उचक लेंगे तुम्हें

النَّاسُ	فَاٰوٰىكُمْ	وَاَيَّدَكُمْ	بِنَصْرِهٖ	وَرَزَقَكُمْ	مِّنَ الطَّيِّبٰتِ
लोग	फिर उसने ठिकाना दिया तुम्हें	और उसने ताईद की तुम्हारी	अपनी मदद से	और उसने रिज़्क़ दिया तुम्हें	पाकीज़ा चीज़ों से

لَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ ﴿26﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تَخُوْنُوا	اللّٰهَ	وَالرَّسُوْلَ
ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम ख़्यानत करो	अल्लाह	और उसके रसूल की

وَتَخُوْنُوْٓا	اَمٰنٰتِكُمْ	وَاَنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ ﴿27﴾	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّمَآ	اَمْوَالُكُمْ
और (ना) तुम ख़्यानत करो	अपनी अमानतों में	जबकि तुम	तुम जानते हो	और जान लो	बेशक	माल तुम्हारे

ع 3/9/17

وَاَوْلَادُكُمْ	فِتْنَةٌ ۙ	وَّاَنَّ	اللّٰهَ	عِنْدَهٗٓ	اَجْرٌ	عَظِيْمٌ ﴿28﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا
और औलाद तुम्हारी	आज़माइश हैं	और बेशक	अल्लाह	उसके पास	अजर है	बहुत बड़ा	ऐ

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اِنْ	تَتَّقُوا	اللّٰهَ	يَجْعَلْ	لَّكُمْ	فُرْقَانًا	وَّيُكَفِّرْ
लोगो जो	ईमान लाए हो	अगर	तुम डरोगे	अल्लाह से	वो बना देगा	तुम्हारे लिए	फ़ुरक़ान	और वो दूर कर देगा

عَنْكُمْ	سَيِّاٰتِكُمْ	وَيَغْفِرْ	لَكُمْ ۗ	وَاللّٰهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيْمِ ﴿29﴾
तुम से	बुराइयां तुम्हारी	और बख़्श देगा	तुम्हें	और अल्लाह	फ़ज़्ल वाला है	बहुत बड़े

وَاِذْ	يَمْكُرُ	بِكَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لِيُثْبِتُوْكَ	اَوْ	يَقْتُلُوْكَ
और जब	चालें चल रहे थे	साथ आपके	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	ताकि वो क़ैद करलें आपको	या	वो क़त्ल करदें आपको

اَوْ	يُخْرِجُوْكَ ۗ	وَيَمْكُرُوْنَ	وَيَمْكُرُ	اللّٰهُ ۗ	وَاللّٰهُ	خَيْرُ
या	वो निकाल दें आपको	और वो चालें चल रहे थे	और तदबीर कर रहा था	अल्लाह	और अल्लाह	बेहतर है

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمٰكِرِيْنَ (30)	وَاِذَا	تُتْلٰى	عَلَيْهِمْ	اٰيٰتُنَا	قَالُوْا	قَدْ	سَمِعْنَا
सब तदबीर करने वालों से	और जब	पढ़ी जाती हैं	उन पर	आयात हमारी	वो कहते हैं	तहक़ीक़	सुन लिया हमने

لَوْ	نَشَآءُ	لَقُلْنَا	مِثْلَ	هٰذَآ ۙ	اِنْ	هٰذَآ	اِلَّآ	اَسَاطِيْرُ	الْاَوَّلِيْنَ (31)
अगर	हम चाहें	अलबत्ता कह लें हम	मानिंद	इसी के	नहीं	ये	मगर	कहानियां	पहलों की

وَاِذْ	قَالُوا	اللّٰهُمَّ	اِنْ	كَانَ	هٰذَا	هُوَ	الْحَقَّ	مِنْ عِنْدِكَ
और जब	उन्होंने कहा	ऐ अल्लाह	अगर	है	ये	वो ही	जो हक़ है	तेरे पास से

فَاَمْطِرْ	عَلَيْنَا	حِجَارَةً	مِّنَ السَّمَآءِ	اَوِ	ائْتِنَا	بِعَذَابٍ	اَلِيْمٍ (32)
तो बरसा	हम पर	पत्थर	आसमान से	या	ले आ हम पर	अज़ाब	दर्दनाक

وَمَا	كَانَ	اللّٰهُ	لِيُعَذِّبَهُمْ	وَاَنْتَ	فِيْهِمْ ؕ	وَمَا	كَانَ	اللّٰهُ
और नहीं	है	अल्लाह	कि वो अज़ाब दे उन्हें	जबकि आप	उनमें (मौजूद हों)	और नहीं	है	अल्लाह

مُعَذِّبَهُمْ	وَهُمْ	يَسْتَغْفِرُوْنَ (33)	وَمَا	لَهُمْ	اَلَّا	يُعَذِّبَهُمُ
अज़ाब देने वाला है उन्हें	जबकि वो	वो इस्तग़फ़ार कर रहे हों	और क्या है	उन्हें	कि ना	अज़ाब देगा उन्हें

اللّٰهُ	وَهُمْ	يَصُدُّوْنَ	عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ	وَمَا	كَانُوْٓا	اَوْلِيَآءَهٗ ؕ
अल्लाह	हालांकि वो	वो रोकते हैं	मस्जिदे हराम से	हालांकि नहीं	हैं वो	मुतवल्ली उसके

اِنْ	اَوْلِيَآؤُهٗٓ	اِلَّا	الْمُتَّقُوْنَ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ (34)	وَمَا
नहीं	मुतवल्ली उसके	मगर	मुत्तक़ी लोग	और लेकिन	अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	और ना

كَانَ	صَلَاتُهُمْ	عِنْدَ	الْبَيْتِ	اِلَّا	مُكَآءً	وَّتَصْدِيَةً ؕ	فَذُوْقُوا
थी	नमाज़ उनकी	पास	बैतुल्लाह के	मगर	सीटियां बजाना	और तालियां बजाना	पस चखो

الْعَذَابَ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَكْفُرُوْنَ (35)	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
अज़ाब	बवजह उसक जो	थे तुम	तुम कुफ़्र करते	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़र किया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُنْفِقُوْنَ	اَمْوَالَهُمْ	لِيَصُدُّوْا	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ	فَسَيُنْفِقُوْنَهَا	ثُمَّ
वो ख़र्च करते हैं	अपने मालों को	ताकि वो रोकें	अल्लाह के रास्ते से	पस अनक़रीब वो ख़र्च करेंगे उसे	फिर

تَكُوْنُ	عَلَيْهِمْ	حَسْرَةً	ثُمَّ	يُغْلَبُوْنَ ؕ۬	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِلٰى
वो हो जाएगा	उन पर	हसरत (का सबब)	फिर	वो मग़लूब किए जाएंगे	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	तरफ़

جَهَنَّمَ	يُحْشَرُوْنَ ﴿36﴾ ۙ	لِيَمِيْزَ	اللّٰهُ	الْخَبِيْثَ	مِنَ الطَّيِّبِ	وَيَجْعَلَ
जहन्नम के	वो इकट्ठे किए जाएंगे	ताकि जुदा करदे	अल्लाह	नापाक को	पाक से	और वो कर दे

الْخَبِيْثَ	بَعْضَهٗ	عَلٰى بَعْضٍ	فَيَرْكُمَهٗ	جَمِيْعًا	فَيَجْعَلَهٗ
नापाक को	उसके बाज़ को	बाज़ पर	फिर वो ढेर लगा दे उसका	सबका	फिर वो डाल दे उसे

ع 4 9 18

فِيْ جَهَنَّمَ ؕ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿37﴾ ع	قُلْ	لِّلَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اِنْ
जहन्नम में	यही लोग हैं	वो	जो ख़सारा पाने वाले हैं	कह दीजिए	उनके लिए जिन्होंने	कुफ़्र किया	अगर

يَّنْتَهُوْا	يُغْفَرْ	لَهُمْ	مَّا	قَدْ	سَلَفَ ج	وَاِنْ	يَّعُوْدُوْا
वो बाज़ आजाएं	बख़्श दिया जाएगा	उनके लिए	जो	तहक़ीक़	पहले हो गया	और अगर	वो पलटेंगे

فَقَدْ	مَضَتْ	سُنَّتُ	الْاَوَّلِيْنَ ﴿38﴾	وَقَاتِلُوْهُمْ	حَتّٰى	لَا تَكُوْنَ
तो तहक़ीक़	गुज़र चुकी	सुन्नत (तरीक़ा)	पहलों की	और जंग करो उनसे	यहां तक कि	ना रहे

فِتْنَةٌ	وَّيَكُوْنَ	الدِّيْنُ	كُلُّهٗ	لِلّٰهِ ج	فَاِنِ	انْتَهَوْا	فَاِنَّ
कोई फ़ितना	और हो जाए	दीन	सारे का सारा	अल्लाह के लिए	फिर अगर	वो बाज़ आजाएं	तो बेशक

اللّٰهَ	بِمَا	يَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ ﴿39﴾	وَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ
अल्लाह	उसे जो	वो अमल करते हैं	ख़ूब देखने वाला है	और अगर	वो मुंह मोड़ जाएं	तो जान लो	बेशक

اللّٰهَ	مَوْلٰىكُمْ ؕ	نِعْمَ	الْمَوْلٰى	وَنِعْمَ	النَّصِيْرُ ﴿40﴾
अल्लाह	मौला है तुम्हारा	कितना अच्छा है	मौला	और कितना अच्छा है	मददगार

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION